दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7

3 दो माह में तैयार होंगी शहर की ये तीन सड़कें मिलेगी राहत

5 यूपी में सताने लगी गर्मी

8 नवीन से सुलह पर भी किया खुलासा

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 38 | पृष्ठ संख्याः 10 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 15 अप्रैल, 2024

दरोगा प्रकरण– 50 लाख की हेराफेरी की आयकर जांच शुरू

44 लाख रुपये कोतवाली थाने के माल गोदाम में रखे मिले

गोरखपुर। वाहन चेकिंग के दौरान पकड़ी गई रकम में 50 लाख की हेराफेरी मामले की यकर जांच भी शुरू हो गई है। व्यापारी के रुपयों की जांच के लिए आयकर विभाग के दो अधिकारी बुधवार को कोतवाली थाने पहुंचे। गोरखपुर में वाहन चेकिंग के दौरान पकड़ी गई रकम में 50 लाख की हेराफेरी मामले की आयकर जांच भी शुरू हो गई है। व्यापारी के रुपयों की जांच के लिए आयकर विभाग के दो अधिकारी बुधवार को कोतवाली थाने पहुंचे। उन्होंने पुलिस द्वारा जब्त की गई रकम की जानकारी ली।

अब लखनऊ से वारंट का इंतजार है। इसी वारंट के आधार पर आयकर विभाग थाने से रकम को अपने अभिरक्षा में लेते हुए पीड़ित को कलमबंद बयान के लिए शमन जारी करेगा। पुलिस के खुलासे के बाद अब आयकर विभाग की टीम ने भी जांच में तेजी ला दी है। दरअसल, एसएसपी ने डीएम, डीजीपी और चुनाव आयोग को पत्र लिखकर पूरे मामले से अवगत कराया है। इसी क्रम में आयकर विभाग को भी पत्र लिखा था। पत्र का संज्ञान लेकर बुधवार को आयकर विभाग से आयकर अधिकारी व चुनाव में जिले के इनकम टैक्स नोडल अधिकारी सूरज कुमार और आयकर अधिकारी (जांच) वीपी सिंह कोतवाली थाने पहुंचे। एसएसआई देवराज सिंह से उन्होंने घटना की जानकारी ली।

आयकर विभाग की टीम ने पूछा कि आरोपी का बयान कैसे लिया जाएगा? इस पर बताया गया कि न्यायालय से आरोपी के पूछताछ के लिए अनुमति लेकर जेल जाकर पूछताछ की जा सकती है। इसके बाद आयकर विभाग की टीम ने रिकवरी किए गए रुपयों की जानकारी ली। एसएसआई ने बताया कि बरामद रुपये मालखाने में रखे हैं। आयकर अधिकारियों ने सीजर रिपोर्ट भी देखी। थाने में दिए गए पीड़ित और आरोपी के बयान भी देखे। करीब 35 मिनट तक रुकने के बाद दोनों अधिकारी लौट गए। आयकर विभाग के नियमानुसार, अब दोनों अधिकारी थाने के मुआयना की रिपोर्ट बनाएंगे।

वारंट आने के बाद शुरू करेंगे जांच

आयकर विभाग की टीम लखनऊ मुख्यालय से वारंट आने का इंतजार करेगी। वारंट आने के बाद इसी आधार पर थाने के मालखाने में जमा 44 लाख रुपये अपनी अभिरक्षा में लेंगे। इसके बाद व्यापारी को शमन देकर पूछताछ के लिए बुलाया जाएगा। पूछताछ में अगर व्यापारी रुपये का हिसाब किताब दे सका तो कुल धनराशि उसे सौंप दी जाएगी। अगर जवाब नहीं दे सका तो रिपोर्ट मुख्यालय भेजकर आगे के कार्रवाई की संस्तुति की जाएगी।

यह था मामला

बेनीगंज चौकी के प्रभारी ने एक व्यापारी की गाड़ी चेकिंग के दौरान उनके पास से 85 लाख रुपये बरामद किए। आरोप है कि इसमें से 50 लाख रुपये उन्होंने अपने पास रख लिए। इसकी लिखा–पढ़ी भी नहीं की। रुपये मांगने पर हवाला का तर्क देते हुए व्यापारी को एनकाउंटर की धमकी दी।

इसकी शिकायत एसएसपी से कर दी गई। उन्होंने मामले की जांच कराई आरोप सही पाया और चौकी इंचार्ज के पास से 44 लाख रुपये भी बरामद कर लिए। तहरीर के आधार केस दर्ज करने के साथ तत्कालीन चौकी इंचार्ज को निलंबित कर दिया। मंगलवार को रुपये बरामद करते हुए आरोपी को जेल भेज दिया गया। चूंकि, 10 लाख रुपये से अधिक की रकम पुलिस ने बरामद की थी और व्यापारी ने खुद स्वीकार किया कि वह प्रतिदिन व्यापार के सिलसिले में कलेक्शन का काम करता है। ऐसे में आयकर विभाग की टीम अब मामले की जांच में लग गई।

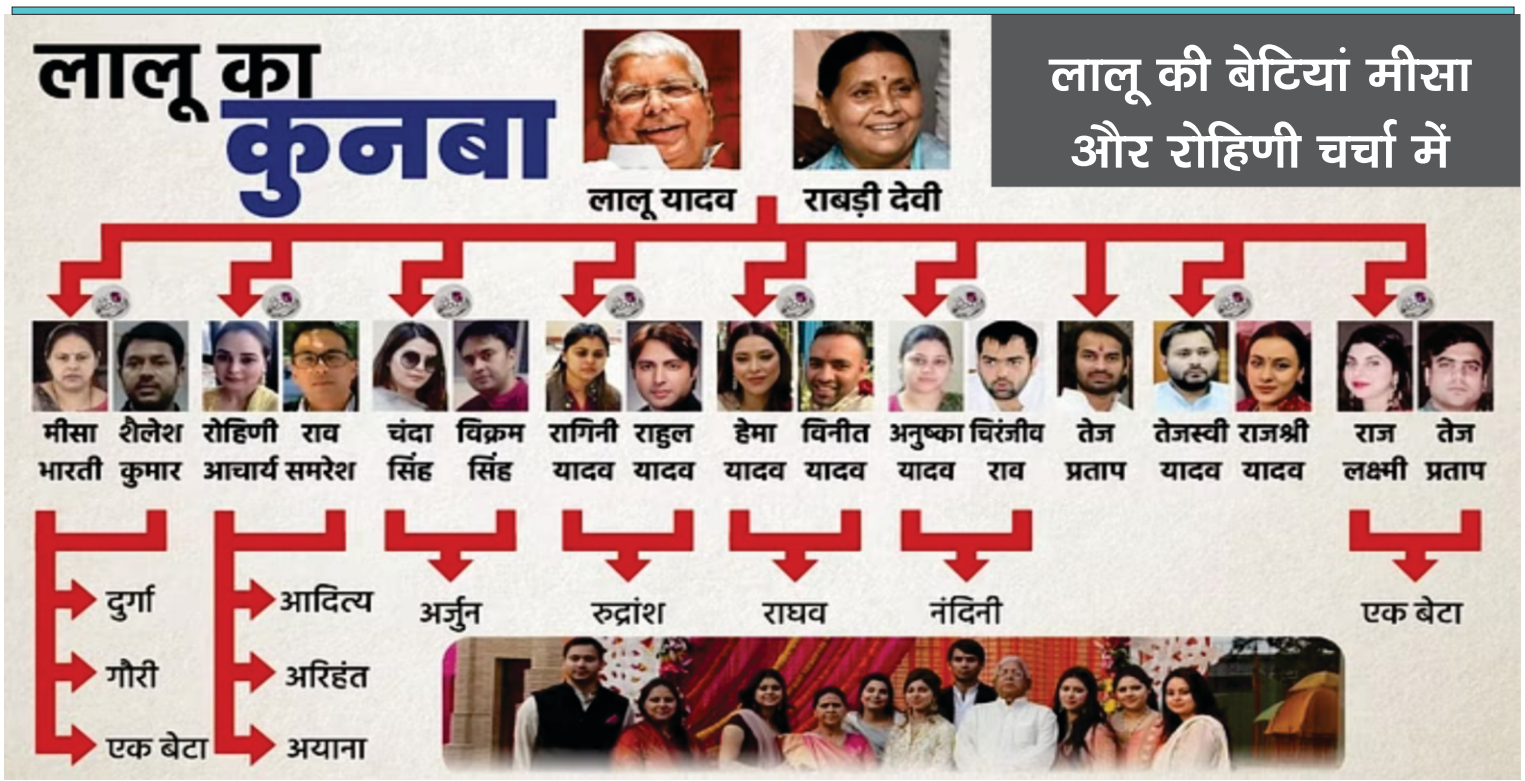

नई दिल्ली। बिहार की राजनीति में एक बार फिर लालू यादव चर्चा में है। राजद ने उम्मीदवारों की लिस्ट में लालू यादव की दो बेटियों रोहिणी आचार्य और मीसा भारती को उम्मीदवार बनाया गया है। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए बिहार में प्रमुख दलों ने अपने अधिकतर उम्मीदवार घोषित कर दिए हैं। हाल ही में लालू यादव की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल ने 22 प्रत्याशियों की सूची जारी की। इसमें लालू यादव परिवार से भी दो लोगों को टिकट मिले हैं। पूर्व मुख्यमंत्री की दो बेटियों मीसा भारती और रोहिणी आचार्य को राजद ने उम्मीदवार बनाया है।

मीसा भारती अभी राजद की तरफ से राज्यसभा सांसद हैं। वहीं रोहिणी आचार्य पहली बार सक्रिय राजनीति में उतरी हैं। उधर लालू यादव के दो बेटे तेज प्रताप और तेजस्वी यादव बिहार में राजद के विधायक हैं। आइये जानते हैं कि लालू प्रसाद यादव के परिवार में कौन–कौन है और क्या करता है? कितने सदस्य राजनीति में हैं?

शुरुआत लालू प्रसाद यादव से करते हैं

आरजेडी प्रमुख लालू प्रसाद यादव का जन्म बिहार के गोपालगंज जिले में हुआ था। पिता का नाम कुंदन राय और माता के नाम मरछिया देवी था। लालू प्रसाद यादव कुल सात भाई–बहन थे।

1. मंगरु यादवः लालू के भाई बहनों में मंगरु यादव सबसे बड़े थे। इनका परिवार आज भी लालू यादव के पैतृक गांव फुलवरिया में बसा है। बिहार में हुए पिछले पंचायत चुनाव में मंगरु यादव की पुत्रबधू मुखिया पद की उम्मीदवार थीं। हालांकि वो चुनाव हार गईं।

2. गुलाब यादवः लालू के भाई–बहनों में गुलाब दूसरे नंबर पर आते हैं। गुलाब यादव के दो बेटे और चार बेटियां हैं। 2011 में 75 साल की उम्र में गुलाब यादव का निधन हो गया था। वह दमा और दिल की बिमारी से पीड़ित थे। गुलाब भी सक्रिय राजनीति में रहे थे। वह फुलवरिया प्रखंड के पूर्व प्रमुख भी रहे।

3. मुकुंद यादवः कुंदन राय और मरछिया देवी के तीसरे बेटे मुकुंद यादव रहे। मुकुंद पशुपालन विभाग में चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी थे। लालू यादव के साथ रह कर ही इन्होंने अपनी पढ़ाई की थी। मुकुंद के तीन बेटे और तीन बेटियां हैं। 2013 में 75 साल की उम्र में मुकुंद का भी निधन हो गया था।

4. महावीर यादवः भाई–बहनों में महावारी यादव चौथे नंबर पर थे। ये भी अब इस दुनिया में नहीं हैं। उनकी पत्नी का नाम गिरजा देवी था। महावीर यादव के तीन बेटे और दो बेटियां थीं।

5. गंगोत्री देवीः लालू की इकलौती बहन गंगोत्री देवी थीं। 2018 में गंगोत्री देवी का निधन दिल का दौरा पड़ने के कारण हुआ था। कहा जाता है कि छह भाइयों में अकेली बहन होने के कारण गंगोत्री सबकी लाडली थीं। इनके पति का नाम जगधारी चौधरी था।

6. लालू प्रसाद यादव : गंगोत्री के बाद लालू प्रसाद यादव का नंबर आता है। लालू का जन्म 1948 में गोपालगंज जिले में हुआ था। लालू के साथ–साथ पत्नी राबड़ी देवी भी बिहार की मुख्यमंत्री रह चुकी हैं। लालू प्रसाद यादव की सात बेटियां और दो बेटे हैं। बेटों का नाम तेजस्वी यादव और तेज प्रताप यादव है। वहीं, बेटियों में मीसा भारती, रोहिणी आचार्य, चंदा सिंह, रागिनी यादव, हेमा, अनुष्का और राज लक्ष्मी हैं।

7. शुकदेव यादवः लालू के भाई–बहनों में शुकदेव यादव सबसे छोटे हैं।

अभी भी नहीं खुले पत्ते

लखनऊ। कैसरगंज और रायबरेली सीट को लेकर रहस्य बरकरार है। रायबरेली में भाजपा और कांग्रेस दोनों ही एक–दूसरे के प्रत्याशी का इंतजार कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी की बुधवार को प्रत्याशियों की दसवीं सूची जारी हो गई। उत्तर प्रदेश के लोकसभा उम्मीदवारों की यह तीसरी सूची थी। पहली सूची में 51, दूसरी में 12 और तीसरी फेहरिस्त में सात प्रत्याशियों की घोषणा के साथ कुल 70 सीटों पर चेहरे मैदान में उतर गये। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सहयोगी दलों की सीटों को छोड़कर भाजपा ने अपने कोटे की 75 सीटों में पांच पर अभी प्रत्याशियों का ऐलान नहीं किया है। इनमें अवध क्षेत्र की दो हाईप्रोफाइल सीटें भी हैं। अव्वल कैसरगंज, दूसरी रायबरेली। दोनों ही सीटों पर कयासबाजी और रणनीति के अपने–अपने दावे हैं। खास बात ये है कि भाजपा के शीर्ष नेताओं में सहमति पर अंतिम चर्चा होनी शेष है। यूपी के पांच बचे लोकसभा क्षेत्रों में दावेदारों के पैरोकारों ने आखिरी क्षण तक उम्मीद लगा रखी है। कैसरगंज में मौजूदा सांसद बृजभूषण शरण सिंह को एक बार फिर निराशा हाथ लगी है। दिल्ली से लौटने के बाद वह आश्वस्त थे कि आने वाली सूची में कैसरगंज से उनका नाम जरूर होगा, लेकिन तरबगंज विधायक प्रेमनरायन पांडेय और करनैलगंज विधायक अजय सिंह की मजबूत दावेदारी के चलते टिकट अभी जारी नहीं हो सका। सपा और बसपा ने भी यहां से अभी तक प्रत्याशियों का ऐलान नहीं किया है। ये दोनों दल भाजपा की तरफ टकटकी लगाये हैं। रायबरेली में कांग्रेस से इस बार सोनिया गांधी चुनाव नहीं लड़ेंगी। उन्होंने राजस्थान से राज्यसभा जाकर ये संकेत पहले ही दे दिया था। उनके स्थान पर कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा का नाम सबसे ऊपर है। भाजपा की ओर से राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश सिंह और ऊंचाहार से विधायक मनोज कुमार पांडेय भी शामिल हैं।

अन्य दलों ने भी साधी चुप्पी

कैसरगंज और रायबरेली दोनों ही सीटों पर भाजपा और अन्य प्रमुख दलों ने प्रत्याशियों के पत्ते अभी नहीं खोले हैं। साल 2019 के आम चुनाव में कैसरगंज से बृजभूषण शरण सिंह जीते थे। रायबरेली सीट से कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी चुनकर संसद पहुंची थीं। कैसरगंज पिछले चुनाव में सपा से समझौते के तहत बसपा के खाते में गई थी। बसपा प्रत्याशी चंद्रदेव राम यादव उर्फ करेली को हार का सामना करना पड़ा। रायबरेली से भाजपा प्रत्याशी दिनेश प्रताप सिंह उपविजेता घोषित हुए। सपा और कांग्रेस में गठबंधन होने पर कैसरगंज सपा के खाते में गई, जबकि रायबरेली कांग्रेस के पास है।

पांचवें चरण में होना है इन सीटों पर मतदान

देवीपाटन मंडल की कैसरगंज सीट और लखनऊ मंडल के रायबरेली लोकसभा क्षेत्र में पांचवें चरण में वोटिंग होनी है। दोनों ही सीटें भाजपा के सांगठनिक रूप से गठित अवध क्षेत्र की 16 सीटों में आती हैं। यहां 26 अप्रैल से नामांकन शुरू होगा। तीन मई नॉमिनेशन की अंतिम तिथि है। नामांकन पत्र की जांच चार मई जबकि नाम वापसी की आखिरी तिथि छह मई है। यहां मतदान 20 मई को होना है।

भाजपा की सूची में उत्तर प्रदेश के सात

प्रत्याशियों के नाम घोषित हो गये। इससे पूर्व 12 सीटों पर अंतिम मुहर शीर्ष नेताओं की बैठक में पांच पर फैसला नहीं हो सका। इनमें तीसरे चरण की फिरोजाबाद, पांचवें चरण की कैसरगंज और रायबरेली, छठवें चरण की भदोही और अंतिम चरण की देवरिया संसदीय सीट शामिल है।

नरेंद्र मोदी हर सीट पर प्रत्याशी

अवध क्षेत्र में रायबरेली और कैसरगंज सीट पर पार्लियामेंट्री बोर्ड को नाम तय करना है। इसकी शीघ्र घोषणा हो जाएगी। प्रत्याशी के दम पर भाजपा कभी भी चुनाव नहीं लड़ती है। सांगठनिक कार्य और नीतिगत कार्यक्रमों की बदौलत हर क्षेत्र में भाजपा की सीधे पैठ है। कमल चुनाव निशान और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का चेहरा प्रत्येक सीट पर प्रत्याशी है।

सम्पादकीय

केजरीवाल को हटाने की कोशिशें जारी हैं

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा 21 मार्च को उनके शासकीय आवास से गिरफ्तार किये गये दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पहले दो बार ईडी की हिरासत में रहे। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा 21 मार्च को उनके शासकीय आवास से गिरफ्तार किये गये दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पहले दो बार ईडी की हिरासत में रहे, उसके बाद 1 अप्रैल के बाद से न्यायिक हिरासत में तिहाड़ जेल के बैरक नम्बर–2 में हैं। उनकी गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिकाएं पहले राउज़ एवेन्यू कोर्ट और फिर दिल्ली हाईकोर्ट द्वारा (मंगलवार को) रद्द कर देने के बाद केजरावील सुप्रीम कोर्ट के दरवाजे पर हैं। हाईकोर्ट मानता है कि उनके खिलाफ भ्रष्टाचार के पर्याप्त सबूत हैं और उनकी गिरफ्तारी वैध है। हालांकि जिस रात उन्हें ईडी ने गिरफ्तार किया था उसी शाम उनके वकीलों ने याचिका लगाकर कोशिश की थी कि शीर्ष अदालत रात को ही सुनवाई करे। ऐसा तो नहीं हुआ, बाद में उन्होंने खुद ही यह याचिका वापस ले ली और निचली कोर्ट में गये। सीएम पद से इस्तीफा न देकर केजरीवाल जेल से ही सरकार चला रहे हैं जिसके संवैधानिक प्रावधान हैं।

अब यह तो बाद में पता चलेगा कि सुप्रीम कोर्ट केजरीवाल की गिरफ्तारी को लेकर क्या फैसला लेता है, लेकिन यहां उल्लेख इस बात का ज़रूरी है कि दिल्ली हाईकोर्ट ने बुधवार को ही आम आदमी पार्टी के पूर्व मंत्री संदीप कुमार की उस याचिका को खारिज कर दिया जिसमें उन्होंने मांग की थी कि केजरीवाल को सीएम पद से हटाया जाये। इस तरह की यह तीसरी याचिका थी जो इसी कोर्ट द्वारा खारिज की गई हैं। संदीप कुमार का कहना था कि केजरीवाल अब मुख्यमंत्री के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने में असमर्थ हैं। उनके जेल में रहने से संवैधानिक जटिलताएं उत्पन्न हो गई हैं और दिल्लीवासियों के अधिकार की गारंटी भी प्रभावित हो रही है। पहले यह याचिका जस्टिस सुब्रमण्यम की कोर्ट में लगाई गई थी जिसे यह कहकर कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश मनमोहन एवं जस्टिस मनमीत प्रीतम सिंह अरोड़ा की बेंच को भेज दिया गया था कि वे पहले से ही इस तरह की याचिकाओं की सुनवाई कर चुके हैं। अब तीसरी याचिका को खारिज करते हुए बुधवार को दिल्ली हाईकोर्ट ने न सिर्फ सख्त टिप्पणी की, बल्कि याचिकाकर्ता पर भारी जुर्माना भी लगाया।

अनुमानों के अनुकूल दो सदस्यीय बेंच ने इस फैसले को खारिज करते हुए याचिकाकर्ता को कड़े शब्दों में कहा कि 'वे यहां राजनीतिक भाषण न दें। अगर वे ऐसा करना ही चाहते हैं तो सड़क पर या किसी गली के कोने में जायें।' न्यायाधीशों ने याचिकाकर्ता पर 50 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया। उनका कहना था कि 'याचिकाकर्ता कोर्ट को राजनैतिक जाल में फंसाने की कोशिश कर रहे हैं।' बेंच ने अपने आदेश में तल्ख़ टिप्पणी की कि 'सिस्टम का इस तरह से मज़ाक बनाना बन्द किया जाये।' उन्होंने कहा कि फैसला केजरीवाल को करना है कि वे इस्तीफा देते हैं या पद पर बने रहते हैं। उन्होंने चेताया कि 'यह कोई जेम्स बॉन्ड की फिल्म नहीं है जिसके बार–बार सीक्वल आते रहेंगे।'

याचिकाकर्ता का दावा था कि पहले भी ऐसा हुआ है कि जेल में जाने पर मुख्यमंत्री हटाये गये हैं। हालांकि संदीप कुमार के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था जब अदालत ने उनसे कहा कि वे कोई दृष्टांत दिखाएं। सच तो यह है कि याचिकाकर्ता ऐसा कोई उदाहरण पेश कर भी नहीं सकते थे क्योंकि भारत के संसदीय इतिहास में यह पहला वाकया है जब कोई मौजूदा सीएम इस प्रकार से गिरफ्तार किया गया हो। वे तमिलनाडु की सीएम जयललिता की बात कर रहे थे परन्तु वे भूल गये कि जयललिता दोषी करार दी जा चुकी थीं। संविधान इसकी इज़ाज़त देता है कि जब तक दोषी साबित न हो जाये तब तक संवैधानिक पद पर बैठा व्यक्ति जेल से अपना कार्य कर सकता है। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को भी इसी प्रकार गिरफ्तार किया था लेकिन उन्होंने गिरफ्तारी के पहले त्यागपत्र दे दिया था। इस तरह केजरीवाल का मामला पहला और एकमेव है।

इसके पहले इसी बेंच ने हिन्दू सेना प्रमुख विष्णु गुप्ता की जनहित याचिका को भी खारिज किया था जिसमें यही मांग की गई थी। तब भी पद पर बने रहने का निर्णय केजरीवाल पर छोड़ते हुए दोनों न्यायधीशों ने कहा था कि कभी–कभी व्यक्तिगत हितों से ऊपर राष्ट्रहित को रखना होता है। कोर्ट यह फैसला नहीं कर सकती। यह तय करना राष्ट्रपति या दिल्ली के उप गवर्नर को करना होगा। एलजी पर्याप्त सक्षम हैं और उन्हें हमारी सलाह की आवश्यकता नहीं है। याचिकाकर्ता चाहें तो उनसे (एलजी या राष्ट्रपति) निवेदन कर सकते हैं। उससे भी पहले 28 मार्च को कोर्ट द्वारा सुरजीत सिंह यादव नामक एक व्यक्ति की ऐसी ही याचिका खारिज की गई थी। तब भी कहा गया था कि यह फैसला करना कार्यपालिका और राष्ट्रपति का है। कोर्ट इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता। हाईकोर्ट के इस रुख के बावजूद बार–बार ऐसी याचिकाएं लगाने का आशय समझने के लिये याचिकाकर्ताओं की पृष्ठभूमि देखें तो साफ है कि वे या तो भारतीय जनता पार्टी के समर्थक या अनुषांगिक संगठनों के सदस्य हैं या आप से खार खाये बैठे हैं, जिसके केजरीवाल राष्ट्रीय संयोजक हैं। दोषी करार होते तक किसी पद को सम्हालने की अनुमति संविधान में ही निहित होने से केन्द्र सरकार सीधी कार्रवाई न कर इन लोगों के जरिये केजरीवाल को हटाने प्रयासरत है।

केन्द्रीय गृह मंत्रालय के इशारे पर काम करने वाले दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना पहले दिन से ही कह रहे हैं कि 'दिल्ली सरकार को जेल से नहीं चलने दिया जायेगा।' ये सारे लोग केजरीवाल को हटाकर दिल्ली में संवैधानिक संकट खड़ा करना चाहते हैं ताकि सरकार को भंग किया जा सके। इसका लाभ वे लोकसभा चुनाव में उठाना चाहते हैं– खासकर, दिल्ली एवं पंजाब में जहां आप की सरकारें हैं। संयुक्त प्रतिपक्ष गठबन्धन इंडिया को भी धक्का देने की उनकी कोशिश है जिसका आप एक मजबूत सहयोगी है।

हर एक दिल में है इस ईद की खुशी

इस्लाम के अनुयायियों के लिए रमज़ान महीने की अहमियत इसलिए भी है कि इन्हीं दिनों पैगम्बर हज़रत मुहम्मद साहब के ज़रिए अल्लाह की अहम किताब कुरआन शरीफ़ ज़मीन पर उतरी थी। यही वजह है कि इस पूरे महीने मुस्लिम भाई–बहन रोज़े रखते हैं और अपना ज़्यादातर वक्त इबादत–तिलावतों (नमाज़ पढ़ना और कुरान पाठ) में गुज़ारते हैं। रमज़ान माह के रोज़े मुसलमानों के लिए फ़र्ज़ करार दिए गए हैं। दुनिया भर के मुसलमानों के लिए ईद–उल–फ़ित्र की बेहद अहमियत है। यह त्यौहार इस्लाम मज़हब के अनुयाइयों के लिए एक अलग ही खुशी लेकर आता है। ईद के शाब्दिक मायने ही 'बहुत खुशी का दिन' है। ईद का चांद आसमां में नज़र आते ही माहौल में एक ग़ज़ब का उल्लास छा जाता है। हर तरफ रौनक ही रौनक अफ़रोज़ हो जाती है। चारों तरफ मुहब्बत ही मुहब्बत नज़र आती है। एक मुक़द्दस खुशी से दमकते सभी चेहरे इंसानियत का पैग़ाम माहौल में फैला देते हैं। शायर मोहम्मद असदुल्लाह ईद की क़ैफ़ियत कुछ यूं बयां करते हैं, 'महक उठी है फ़ज़ा पैरहन की खुशबू से/चमन दिलों का खिलाने को ईद आई है।' कुरआन के मुताबिक पैग़ंबरे इस्लाम ने फ़रमाया है,–'जब अहले ईमान रमज़ान के मुक़द्दस महीने के एहतेरामों से फ़ारिग़ हो जाते हैं और रोज़े–नमाज़ों तथा उसके तमाम कामों को पूरा कर लेते हैं, तो अल्लाह एक दिन अपने उन इबादत करने वाले बंदों को बख्शीश व इनाम से नवाज़ता है। लिहाज़ा इस दिन को ईद कहते हैं और इसी बख्शीश व इनाम के दिन को ईद–उल–फ़ित्र का नाम देते हैं।'

रमज़ान, इस्लामी कैलेंडर का नौवां महीना है। इस्लाम के अनुयायियों के लिए रमज़ान महीने की अहमियत इसलिए भी है कि इन्हीं दिनों पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब के ज़रिए अल्लाह की अहम किताब कुरआन शरीफ़ ज़मीन पर उतरी थी। यही वजह है कि इस पूरे महीने मुस्लिम भाई–बहन रोज़े रखते हैं और अपना ज़्यादातर वक्त इबादत–तिलावतों (नमाज़ पढ़ना और कुरान पाठ) में गुज़ारते हैं। रमज़ान माह के रोज़े मुसलमानों के लिए फ़र्ज़ क़रार दिए गए हैं। रोज़ों की अहमियत इस मायने में है, ताकि इंसान भूख–प्यास का एहसास कर सके। भौतिक वासनाएं और लालच इंसान के वजूद से हमेशा के लिए जुदा हो जाएं और इंसान कुरआन के मुताबिक अपने आप को ढाल लें। रोज़ा ज़ब्ते नफ़्स यानी खुद पर क़ाबू रखने की तरबियत देता है। रोज़ा रखने वालों में परहेज़गारी पैदा करता है। लिहाज़ा रमज़ान का महीना इंसान को अशरफ़ और आला बनाने का महीना है।

लेकिन यदि कोई सिर्फ़ अल्लाह की ही इबादत करे और उसके बंदों से मुहब्बत करने व उनकी मदद करने से हाथ पीछे खींचे, तो ऐसी इबादत को इस्लाम ने ख़ारिज किया है। इस्लाम का पैग़ाम है, 'अगर अल्लाह की सच्ची इबादत करनी है, तो उसके सभी बंदों से प्यार करो और हमेशा सबके मददगार बनो।' पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब ने फ़रमाया है, 'रमज़ान ग़म बांटने का महीना है। यानी ग़रीबों के साथ अच्छा बर्ताव किया जाए। अगर दस चीज़ें अपने रोज़ा इफ़्तार के लिए लाए हैं, तो दो–चार ग़रीबों के लिए भी लाएं। अपने इफ़्तार व सहर के खाने में ग़रीबों का भी खयाल रखें। अगर आपका पड़ोसी ग़रीब है, तो उसका ख़ास तौर पर ख़याल रखें कि कहीं ऐसा न हो कि हम तो खूब पेट भर कर खा रहे हैं और हमारा पड़ोसी थोड़ा खाकर सो रहा है।' इस बारे में पैग़म्बरे इस्लाम ने यहां तक फ़रमाया है, 'जो शख़्स खुद पेट भर खाए और उसके पड़ोस में उसका पड़ोसी भूखा रह जाए, वह ईमान नहीं रखता।'

रमज़ान महीने के ख़त्म होते ही दसवां माह शव्वाल शुरू होता है। माह की पहली चांद रात, ईद की चांद रात होती है। इस रात का इंतज़ार मुस्लिम भाईकृबहनों को पूरे साल भर रहता है। इस इंतज़ार की भी ख़ास वजह होती है, वह इसलिए क्योंकि इस रात को दिखने वाले चांद से ही ईद–उल–फ़ित्र का ऐलान होता है। बच्चे, बड़े–बूढ़े यानी घर के सभी छोटे–बड़े सदस्य अपने–अपने घर की छतों पर चांद का दीदार करने इक_े हो जाते हैं। चांद का दीदार होते ही, मुस्कराते हुए एक–दूसरे को मुबारकबाद देते हैं। ईद की आहट भर से खुशियों से उनके चेहरे दमकने लगते हैं। बड़े–बूढ़ों और बच्चों के चेहरों पर इसका नूर कुछ अलग ही झलकता है। पहली ईद–उल–फ़ित्र, पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब ने सन् ६२४ ईसवी में जंग–ए–बदर के बाद मनाई थी। तब से यह त्यौहार, हर साल सारी दुनिया में मनाया जाता है। इस दिन सभी मुसलमान ईदगाह या मस्ज़िद में इक_े होकर, दो रकअत नमाज़ शुकराने की अदा करते हैं

ईद की नमाज़ से पहले इबादत करने वाले अपने हाथ ऊपर उठाकर यह नीयत बांधते हैं, 'ए अल्लाह, आपका शुक्रिया कि आपने हमारी इबादत क़बूल की। इसके शुकराने में हम दो रकअत ईद की नमाज़ पढ़ रहे हैं।' नमाज़ के बाद मुसलमान भाई खुदा से पूरी दुनिया में सुख–शांति और बरकत के लिए दुआएं मांगते हैं। हां एक और महत्वपूर्ण बात,नमाज़ पढ़ने के लिए जाने से पहले सभी मुसलमान फ़ितरा यानी जान व माल का सदक़ा, जो हर मुसलमान पर फ़र्ज़ होता है, वह ग़रीबों में बांटते हैं।

सदक़ा, ग़रीबों की इमदाद (मदद) का एक तरीक़ा है। ग़रीब आदमी भी इस इमदाद से साफ़ और नये कपड़े पहन कर,अपना मनपसंद खाना खाकर ईद मना सकते हैं। इसके अलावा रमज़ान के महीने में आर्थिक रूप से सक्षम हर मुसलमान को अपनी सालाना आमदनी का ढाई फ़ीसदी ग़रीबों को दान में देना होता है। इस दान को ज़कात कहते हैं। इस्लाम मज़हब पांच अहम स्तंभों पर टिका हुआ है, जिसमें रोज़ा और ज़कात भी शामिल है। ज़कात हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। इस बंदोबस्त के पीछे इस्लाम मज़हब की यह सोच है कि हर ज़रूरतमंद तक मदद पहुंचे, जिससे वे भी ईद की खुशियों में शामिल हो सकें। जो भी आपके आस–पास ग़रीब, लाचार, अनाथ, मज़लूम हैं इस पर उनका सबसे पहला हक़ है। भूखे का कोई मज़हब नहीं होता। ज़कात, सदक़ा और फ़ितरा बिना किसी भेदभाव के जो भी ग़रीब, ज़रूरतमंद हों उनको सबसे पहले दें। अपने आसपास जो ग़रीब हैं, उनकी दिल खोलकर मदद करें। यही सच्ची इंसानियत और सच्चे मुसलमान का फ़र्ज़ है।

इस्लाम में अमीर–ग़रीब, छोटे–बड़े, ऊंच–नीच का कोई भेद–भाव नहीं। सभी एक समान हैं। लिहाज़ा सभी आपस में मिलकर यह त्यौहार मनाते है। ईद बुनियादी तौर पर आपस में भाईचारे को बढ़ावा देने वाला भी त्यौहार है। ईद की ख़ास नमाज़ के बाद सभी एक–दूसरे से गले मिलकर, ईद की मुबारकबाद देते हैं। यदि किसी का किसी से कोई गिलाकृशिकवा भी है, तो उसे भुलाकर, गले मिलता है। 'ईद का दिन है गले मिल लीजे/इख्तिलाफ़ात हटा कर रखिए।' यही सभी त्यौहारों का पैग़ाम है। दीगर मज़हब को मानने वाले भी इस दिन ख़ास तौर पर वक्त निकालकर ईदगाह पहुंचते हैं और अपने मुस्लिम भाईयों से गले मिलकर, उन्हें ईद की मुबारकबाद देते हैं। ईद पर बच्चों का जोश और खुशियां देखते ही बनती हैं। नए–नए कपड़े पहने चहकते–महकते बच्चे, चारों तरफ एक खुशी का माहौल बना देते हैं। छोटों को अपने बड़ों से ईदी यानी पैसे या कोई तोहफ़ा मिलता है। हर घर में तरह–तरह की लज़ीज़ सेवइयां और पकवान बनते हैं। दोस्तों और रिश्तेदारों को सेवइयों की दावत दी जाती है। ईद की खुशियां कई दिनों तक दिलों को रौनक करती रहती हैं। मशहूर जनवादी शायर नज़ीर अकबराबादी ने अपनी एक नज़्म में ईद–उल–फ़ित्र के त्यौहार पर क्या खूब कहा है–

'ऐसी न शब–ए–बरात न बकरीद की खुशी/जैसी हर एक दिल में है इस ईद की खुशी।'

2024 के लोकसभा चुनाव में महिला मतदाता निभायेंगी अहम भूमिका

कई पार्टियां महिला मतदाताओं को प्रोत्साहन तो देती हैं लेकिन अपनी उम्मीदवार सूची में महिलाओं को समान प्रतिनिधित्व नहीं देतीं। महिला आरक्षण कानून के अनुसार पार्टियों को अपने टिकटों का कम से कम एक तिहाई हिस्सा महिलाओं के लिए आरक्षित करना चाहिए। राजनीतिक दलों को मतदाताओं को लुभाने के लिए प्रोत्साहनों पर निर्भर रहने के बजाय महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। कई पार्टियां महिला मतदाताओं को प्रोत्साहन तो देती हैं लेकिन अपनी उम्मीदवार सूची में महिलाओं को समान प्रतिनिधित्व नहीं देतीं। महिला आरक्षण कानून के अनुसार पार्टियों को अपने टिकटों का कम से कम एक तिहाई हिस्सा महिलाओं के लिए आरक्षित करना चाहिए। क्या महिला मतदाता आगामी 2024 आम चुनाव का फैसला कर सकती हैं? उनके मतदाताओं की बढ़ती संख्या और अनुकूल कानून, जैसे संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण, उन्हें एक महत्वपूर्ण वर्ग बनाते हैं। राजनीतिक दल इस महत्वपूर्ण वर्ग की महिला मतदाताओं को आकर्षित करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसा करने के लिए, वे विभिन्न लाभ की पेशकश कर रहे हैं।

एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, महिला मतदाताओं का उच्च मतदान 2024 के चुनावों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। रिपोर्ट का अनुमान है कि 2047 तक महिलाओं का मतदान प्रतिशत 55फीसदी तक पहुंच सकता है, जबकि पुरुषों का मतदान प्रतिशत घटकर 45फीसदी हो सकता है।

गौरतलब है कि भारत के संविधान के निर्माता बी.आर.अम्बेडकर ने एक बार कहा था कि – 'राजनीतिक शक्ति सभी सामाजिक प्रगति की कुंजी है।य यह कथन आज भी लागू है, क्योंकि महिलाएं तब तक न्याय पाने की उम्मीद नहीं कर सकतीं जब तक कि निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी न हो।

भारत में महिलाएं लैंगिक पूर्वाग्रह को दूर करने के लिए और अधिक उपायों की मांग कर रही हैं। पिछले सितंबर में संसद ने महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए महिला आरक्षण विधेयक पारित किया था। यह विधेयक संसद और राज्य विधानसभाओं में उनके लिए 33फीसदी आरक्षण सुनिश्चित करता है। कांग्रेस और भाजपा दोनों ने विधेयक के पारित होने का श्रेय लिया। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने कहा, 'यह हमारा विधेयक है।' 2008 में सोनिया गांधी ने इसे उच्च सदन में पारित किया लेकिन लोकसभा में ऐसा करने में विफल रहीं। पिछले सितंबर में पीएम मोदी ने बड़े गर्व के साथ इस विधेयक को पेश किया और पहली बार संसद में इस विधेयक के आने के 27 साल बाद यह लगभग सर्वसम्मति से पास हो गया। जनगणना और परिसीमन प्रक्रिया में देरी के कारण यह विधेयक चार साल बाद ही लागू हो पायेगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से, भारत में केवल एक महिला प्रधानमंत्री और 15 महिला मुख्यमंत्री हुई हैं। हालांकि, 1950 के दशक के बाद से चुनाव लड़ने वाली महिलाओं की संख्या सात गुना बढ़ गई है, और लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 5फीसदी से बढ़कर 15फीसदी हो गया है।

विश्व स्तर पर स्थिति समान है। अंतर–संसदीय संघ के अनुसार, दुनिया भर में लगभग 26फीसदी कानून निर्माता महिलाएं हैं। दूसरी ओर, रवांडा में 60फीसदी से अधिक सीटों पर महिलाओं का कब्जा है। 2008 में, रवांडा महिला–बहुमत संसद वाला पहला देश बन गया।

भारत में केवल 14फीसदी संसदीय सीटें महिलाओं के पास हैं। लोकसभा और राज्यसभा में क्रमशः 78 और 24 महिला सदस्य हैं। संसद के निचले सदन में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के मामले में भारत 193 देशों में 149वें स्थान पर है। इसके अलावा, भारत के प्रत्येक राज्य में 16फीसदी से कम विधायक महिलाएं हैं।

भारत में एक महत्वपूर्ण उपाय 1993 में किया गया तथा पंचायत की एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित कर दी गई थीं, जिसे अब अधिकांश राज्यों में 50प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया है। लगभग दस लाख महिलाएं जमीनी स्तर पर सरपंच के रूप में कार्य करती हैं। ये सरपंच अपने स्थूल अनुभव के बल पर उन्नति की सीढ़ियां चढ़ सकेंगी।

आगामी आम चुनाव में 96.88 करोड़ मतदाता होंगे, जिनमें 47 करोड़ से अधिक महिलाएं हैं। 2.63 करोड़ नये मतदाताओं में से 1.41 करोड़ महिलाएं हैं। केरल, तेलंगाना, तमिलनाडु, पुडुचेरी, गोवा, आंध्र प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम और नागालैंड में अधिक महिलाओं ने मतदान के लिए पंजीकरण कराया है।

महिला आरक्षण विधेयक पारित होने के बावजूद राजनीति में महिलाओं की भागीदारी में कोई खास बढ़ोतरी नहीं हुई है।

जबकि राजनीतिक दलों ने विधेयक का समर्थन किया, उन्होंने हाल के विधानसभा चुनावों में महिलाओं को अपने टिकटों का केवल एक छोटा सा प्रतिशत आवंटित किया, आमतौर पर 10–15प्रतिशत। 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए, भाजपा ने आगामी लोकसभा चुनावों में 421 उम्मीदवारों में से महिलाओं को केवल 67 टिकट दिये। हालांकि, ममता बनर्जी, नीतीश कुमार और अरविंद केजरीवाल जैसे कुछ मुख्यमंत्रियों ने महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लाभों को पहचाना है।

लैंगिक भेदभाव को दूर करने के लिए, पार्टियों को महिला सशक्तीकरण के लिए अधिक महिला नेताओं और उम्मीदवारों को मैदान में उतारने की जरूरत है। हालांकि, कुछ लोगों का तर्क है कि यदि महिलाएं ज्ञात राजनीतिक परिवारों से आती हैं तो वे जीतती हैं। कई नेता उम्मीदवारों को चुनने के लिए अपने परिवार से आगे नहीं देखते हैं। यह समझना जरूरी है कि सभी महिलाएं महिला उम्मीदवारों को वोट नहीं देंगी।

राजनीतिक दलों को मतदाताओं को लुभाने के लिए प्रोत्साहनों पर निर्भर रहने के बजाय महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। कई पार्टियां महिला मतदाताओं को प्रोत्साहन तो देती हैं लेकिन अपनी उम्मीदवार सूची में महिलाओं को समान प्रतिनिधित्व नहीं देतीं।

महिला आरक्षण कानून के अनुसार पार्टियों को अपने टिकटों का कम से कम एक तिहाई हिस्सा महिलाओं के लिए आरक्षित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, पार्टियों को राजनीतिक राजवंशों को दिये जाने वाले तरजीही व्यवहार को हतोत्साहित करना चाहिए।

भारतीय राजनीतिक दल विभिन्न योजनाओं और लाभों के साथ महिला मतदाताओं को लक्षित कर रहे हैं। कर्नाटक में कांग्रेस ने महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा और 2,000 रुपये नकद प्रोत्साहन राशि दिया है। हिमाचल प्रदेश में 18–60 वर्ष की महिलाओं को 1,500 रुपये मासिक दिया जाना है।

दिल्ली की 'मुख्यमंत्री महिला सम्मान योजनाय भी 18 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं को 1,000 रुपये मासिक प्रदान करेगी। पश्चिम बंगाल में टीएमसी ने पारिश्रमिक बढ़ोतरी की घोषणा की है। आप और कांग्रेस 1,000 रुपये मासिक भुगतान करने और गरीब महिलाओं को 1 लाख रुपये सालाना भत्ता देने की घोषणा की है।

महिलाओं के प्रति राजनीतिक जवाबदेही निर्णय लेने में लिंग संतुलन हासिल करने, राजनीतिक दलों में महिलाओं की अधिक महत्वपूर्ण उपस्थिति और प्रभाव को बढ़ावा देने और पार्टी नीतियों और प्लेटफार्मों में लैंगिक समानता के मुद्दों को आगे बढ़ाने से शुरू होती है। इन सबके लिए शिक्षा भी जरूरी है।

हमें ऐसे शासन सुधारों की आवश्यकता है जो लैंगिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील हों। इससे निर्वाचित अधिकारी अधिक प्रतिक्रियाशील हो सकेंगे।

हवाला कारोबार की जड़ें ढूंढेगा आयकर विभाग, कड़ी से कड़ी जोड़ पहुंचेगा 'कौन' तक

गोरखपुर। व्यापारी के पास से पुलिस ने 50 लाख रुपये गलत तरीके से लिए और मामला खुलने पर उसे बरामद भी कर लिया तो अब इन रूपयों के ट्रैवल हिस्ट्री की भी जांच होगी। इसकी जांच आयकर विभाग करेगा। इस दौरान ये रुपये कहां से चले थे? किसके थे? इतनी बड़ी धनराशि सुबह बाइक से लेकर जाने की क्या जरूरत थी? जैसे सवालों के जवाब तलाशेगी।

गोरखपुर में वाहन चेकिंग के दौरान पकड़ी गई रकम में हेराफेरी के मामले में पुलिस की कार्रवाई के बाद अब इसकी जांच आयकर विभाग भी करेगा। चूंकि, व्यापारी ने खुद स्वीकार किया है कि वह रकम व्यापार के सिलसिले में एक जगह से दूसरी जगह ले जा रहा था, ऐसे में आयकर विभाग रकम के स्रोत, आय और फर्म के सापेक्ष जमा करवाए जाने वाले आयकर की भी जांच होगी।

आयकर विभाग इस रकम के हवाला नेटवर्क की जांच करेगा। इसमें पीड़ित के बयान भी दर्ज होंगे। इसी आधार पर आयकर विभाग आगे की कार्रवाई करेगा। आयकर विभाग इस व्यापारी के जरिए उस कड़ी तक पहुंचने का प्रयास करेगी, जिसका ये धन है।

चुनाव आचार संहिता के दौरान या सामान्य अवस्था में भी अगर 10 लाख रुपये से ज्यादा नकदी रकम किसी के पास से बरामद होती है तो इसकी सूचना संबंधित जांच एजेंसी आयकर विभाग को भी देती है। ऐसे में जब

व्यापारी के पास से पुलिस ने 50 लाख रुपये गलत तरीके से लिए और मामला खुलने पर उसे बरामद भी कर लिया तो अब इन रूपयों के ट्रैवल हिस्ट्री की भी जांच होगी। इसकी जांच आयकर विभाग करेगा।

इस दौरान ये रुपये कहां से चले थे? किसी एक व्यापारी के थे या कई के? किस व्यापार के मद में फर्म के नाम से भुगतान न होकर इतना लंबा नकद ले जाया जा रहा था? समेत अन्य जानकारी आयकर विभाग की टीम जांच करेगी। इनकम टैक्स के सूत्र ने बताया कि रुपये बरामद होने के साथ आपराधिक कृत्य(हवाला) के लिए पुलिस ने संबंधित पर कार्रवाई कर दी। लेकिन, अब जांच का विषय है कि ये रुपये आखिर किसके थे? जैसे, मोहित(काल्पनिक नाम) ने बताया कि 50 लाख रुपये लेकर वो नेपाल सीमा पर सोभित(काल्पनिक नाम) को व्यापार के मद में देने जा रहा था। ऐसे में इनकम टैक्स मोहित के फर्म, ऑडिट, क्रय– विक्रय की जांच करेगा।

इसके अलावा इनकम टैक्स जमा करने की जांच करेगा। इसके बाद उसके द्वारा बताए गए सोभित की जांच होगी। अगर सोभित सक्षम व्यापारी हुआ और उसने स्वीकार कर लिया कि मोहित के द्वारा ये रुपये दिए जाने थे और वो इसे आगे तीसरे किसी अंजान शख्स को देता।

ऐसे में तीसरे शख्स की ठीक ऐसे ही जांच होगी। अगर, मोहित या सोभित इसे आर्थिक लेन–देन को खड़ा नहीं कर सके तो जिस अंतिम शख्स के पास से रुपये मिले थे, उन्हें इन रूपयों का मूल हकदार मान लिया जाएगा। इसी आधार पर उनसे उनके व्यापार और हवाला कनेक्शन की जांच होगी।

सूत्र ने बताया कि व्यापारी ने भी तहरीर में किसी व्यापार या किस ट्रेड का व्यापार करते हैं, इसकी जानकारी नहीं दी है। केस दर्ज कराने में उल्लेख किया है कि प्रतिदिन रुपयों का कलेक्शन कर लाते थे। तो नकदी कलेक्शन और एकत्र धनराशि पर इनकम टैक्स उनके द्वारा जमा कराया जाता था या सरकार को टैक्स की चोरी से आर्थिक क्षति पहुंचाई जाती थी, इसकी भी जांच की जाएगी।

इनकम टैक्स वारंट देकर थाने से लेगा कैश का रिकार्ड

दरअसल, अगर किसी थाने में व्यापारी की गाड़ी या उसके पास से 10 लाख रुपये से अधिक की रकम बरामद होती है तो फ्लाइंग स्क्वायड का काम शुरु हो जाता। ये थाने से सूचना लेकर इनकम टैक्स, लखनऊ इसकी सूचना देते हैं। इस टीम में राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी रहते हैं।

इसी रिपोर्ट के आधार पर इनकम टैक्स की टीम सीधे संबंधित थाने पर वारंट लेकर जाता है। इसी वारंट के आधार के पर रूपये की सुपुर्दगी लेकर बयान के लिया बुलवाया जाता। अगर बयान तथ्यपरक नहीं लगे तो पैसों को विभाग के अधीन रखते हुए सम्मान जारी किया जाता है। फिर जांच आगे बढ़ती है।

हवाला का कुरियर करने वालों की भी चांदी

चुनाव के बीच में हवाला कारोबार का दाम अपने आप चढ़ जाता है। सूत्र बताते हैं कि एक करोड़ रुपये हवाला की रकम को एक – तरफ से दूसरी तरफ करने पर 50 हजार रुपये की सीधा फायदो हो जाता है। इसके बदले हवाला की रकम को सुरक्षित जगह तक पहंचाना होता। हिंदी बाजार का सराफा व्यापार हवाला कारोबार के लिए खासा प्रचलित है। इसके अलावा साहबगंज का खूनीपुर चौक, शाहमाहरूफ और बिसाता मंडी इसका एक बड़ा अड्डा है।

साहबगंज मंडी से हवाला का बड़ा खेल

सूत्रों ने बताया कि साहबगंज और मछली मंडी के नेटवर्क से प्रतिदिन 150 करोड़ रुपये से अधिक हवाला का कारोबार होता है। सूत्र ने बताया कि अभी कुछ वर्ष पहले एक व्यापारी के यहां से हवाला का 52 लाख रुपये गलत तरीके से कुरियर लेकर चला गया था। इसकी जानकारी तक किसी को नहीं हो सकी। अवैध सोने के व्यापार के साथ दाल और साहबगंज मंडी में थोक का कारोबार करने वाले भी हवाला के इस नेटवर्क की मजबूत कड़ी हैं।

मुख्य आयकर आयुक्त शिखा दरबारी ने बताया कि पुलिस के कार्रवाई की जानकारी मिली है। व्यापारी के पास से मिले रुपयों की इनकम टैक्स भी अपने नियमों के तहत जांच करवाएगा। चुनाव के दौरान सामान्य तौर इतनी बड़ी धनराशि लेकर ट्रैवल करना, ये सामान्य बात नहीं है। टीम भी इन रुपयों को लेकर नियमानुसार कार्रवाई करेगी।

भारत में अवैध है हवाला

हवाला एक पारंपरिक धन हस्तांतरण प्रणाली है, जहां कोई व्यक्ति पैसे के भौतिक संचलन के बिना एक विशेष राशि(काले धन) को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करता है। भारत में, यह लेनदेन प्रणाली विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) और धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत अवैध है। दोषी पाए जाने पर सजा का भी प्रावधान है।

दरिन्दगी: गोरखपुर के सहजनवां में मासूम संग सामूहिक दुष्कर्म, दो हिरासत में

गोरखपुर। गोरखपुर के सहजनवां कस्बा के एक मकान में किराए पर रहने वाली बिहार की मजदूर की ढाई साल की बेटी से सामूहिक दुष्कर्म का मामला सामने आया है। मंगलवार रात में घटना की सूचना के बाद फॉरेंसिक टीम के साथ पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस ने दो आरोपियों को हिरासत में लेकर सामूहिक दुष्कर्म का केस दर्ज कर लिया है। बच्ची को मेडिकल परीक्षण के लिए भेजा गया है।

जानकारी के मुताबिक, एक फैक्ट्री में काम करने वाले बिहार के कई मजदूर किराए के एक ही मकान में परिवार के साथ रहते हैं। मंगलवार रात महिला अपनी ढाई साल की बच्ची के साथ बैठी थी। इसी दौरान साथ में रहने वाले दो मजदूर आए और मोटर चलाकर पानी लाने को कहा। दोनों ने बच्ची को संभालने की बात कहते हुए उसे गोद में ले लिया।

मां के जाते ही दोनों ने बच्ची के साथ दुष्कर्म किया। बच्ची के शोर मचाने पर मां दौड़ी आई। उसने शोर मचाया तो साथ में रहने वाली अन्य महिलाएं भी आ गईं। इसके बाद पुलिस को घटना की जानकारी दी गई।

पुलिस फॉरेंसिक टीम के साथ मौके पर पहुंच गई और दोनों आरोपियों को हिरासत में ले लिया। पुलिस ने मां की तहरीर पर आरोपियों के खिलाफ सामूहिक दुष्कर्म का केस दर्ज किया है। एसपी नार्थ जितेंद्र कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि तहरीर के आधार पर पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। दो आरोपियों को हिरासत में लेकर मामले की जांच की जा रही है।

दो माह में तैयार होंगी शहर की ये तीन सड़कें मिलेगी राहत

संवाद न्यूज एजेंसी, गोरखपुर । रामगढ़ताल क्षेत्र में दो माह में तीन सड़कों का काम पूरा होने से परिवहन सुविधा बेहतर हो जाएगी। इसमें रामगढ़ताल क्षेत्र के विद्युत उपकेंद्र तारामंडल से देवरिया बाईपास तक बनने वाले दो फोरलेन एक माह में पूरे हो जाएंगे, जबकि दो माह में रामगढ़ताल रिंग रोड बनकर तैयार होने की संभावना है।

इन तीनों प्रोजेक्ट पर तेजी से कार्य किया जा रहा है, जबकि देवरिया बाईपास फोरलेन का काम भी जारी है। रामगढ़ताल क्षेत्र से देवरिया बाईपास रोड तक दो फोरलेन बन रहा है, जिसकी लंबाई 2195 किमी है। इन प्रोजेक्ट पर 95 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। विद्युत उपकेंद्र तारामंडल के पास नाली निर्माण कार्य हो चुका है, जबकि उसके आगे पुल का काम भी हो गया है। वहां कुछ दूरी तक शेष बची सड़क को बनाने के लिए ढलाई का कार्य जारी है, जबकि आगे फोरलेन का काम पूरा हो चुका है। इसी प्रकार दूसरी ओर महंत दिग्विजय नाथ पार्क के सामने नाली काम पूरा हो चुका है। उसके आगे पुलिया का काम चल रहा है। पुलिया से करीब 100 मीटर आगे फोरलेन और नाली का काम पूरा हो गया है। यह सड़क वाणिज्य कर कार्यालय के पास देवरिया

बाईपास से जुड़ी है।

रामगढ़ताल रिंग रोड पर पैडलेगंज से मोहद्दीपुर की ओर दो लेन की सड़क का कार्य तेजी से किया जा रहा है। पैडलेगंज में पुलिया की एक लेन बन गई है, जबकि दूसरी लेन का कार्य शुरू है। इसमें गिट्टियां बिछा दी गई हैं। यह 2.5 किमी लंबी सडक है, जबकि मोहद्दीपुर से सहारा इस्टेट की ओर चार किमी लंबी सड़क बनाने का काम भी शुरू हो चुका है।

देवरिया बाईपास पर हुआ आधा काम

देवरिया बाईपास को फोरलेन बनाने का कार्य तेजी से किया जा रहा है। दोनों ओर लगभग नाली निर्माण का कार्य चल रहा है, जबकि गिट्टी बिछाने का काम भी हो रहा है। 9.5 किमी लंबे टू लेन सड़क को फोरलेन बनाया जा रहा है। इसमें 50 प्रतिशत कार्य हो चुके हैं।

जीतमम तवंके पद जीम बपजल ूपसस इम तमंकल पद जूव उवदजी, जीमतम ूपसस इम तमसपमफ

निर्माणाधीन देवरिया बाईपास फोरलेन। – फोटो : अमर उजाला

बिजली विभाग के खंभे सड़क के बीच में आने के कारण कार्य बाधित हो रहा है। जीडीए के सामने एक ट्रांसफार्मर शिफ्ट हो चुका है, जबकि 10 से अधिक ट्रांसफार्मर सड़क के बीच में हैं। लोकनिर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता आरपी सिंह ने बताया कि फोरलेन में 50 प्रतिशत कार्य हो चुका है। अक्टूबर तक सड़क का काम पूरा हो जाएगा।

लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियंता अरविंद कुमार ने बताया कि ओर जाने वाले दोनों फोरलेन का काम अप्रैल में पूरा हो जाएगा। इसमें 95 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। जो कार्य अधूरा है, उसे जल्द ही पूरा किया जाएगा।

जीडीए उपाध्यक्ष आनंद वर्द्धन ने बताया कि रामगढ़ताल रिंग रोड में पैडलेगंज से मोहद्दीपुर तक की सड़क का कार्य मई तक पूरा हो जाएगा। पैडलेगंज में जल्द ही पुलिया निर्माण पूरा कराने के निर्देश दिए गए हैं। सड़क का कार्य भी निर्धारित समय में पूरा होगा। मोहद्दीपुर से सहारा इस्टेट तक की सड़क मई तक पूरा होने की संभावना है।

यूपी बोर्ड परीक्षा परिणाम

अप्रैल की इस तारीख तक आ सकता है हाईस्कूल–इंटर का रिजल्ट, टूटेगा ये रिकार्ड

लखनऊ। यूपी बोर्ड परीक्षा परिणाम 25 अप्रैल के पहले ही घोषित किया जा सकता है। यह अपने आप में एक रिकॉर्ड होगा। इसके पहले कभी भी इतनी जल्दी परिणाम घोषित नहीं हुए हैं। यूपी बोर्ड हाईस्कूल और इंटर का परीक्षा परिणाम 25 अप्रैल से पहले जारी किया जा सकता है। अगर 25 से पहले परिणाम जारी हुआ तो यूपी बोर्ड अपना ही रिकॉर्ड तोड़ेगा। इसके पहले 2023 में बोर्ड ने 25 अप्रैल को परिणाम जारी किया था। यूपी बोर्ड की परीक्षाएं 22 फरवरी से शुरू हुई थीं। परीक्षा में प्रदेश भर के करीब 55 लाख विद्यार्थी शामिल हुए थे।

माध्यमिक के विद्यार्थी करेंगे साइबर सुरक्षा की पढ़ा

उप्र माध्यमिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में साइबर सुरक्षा की पढ़ाई होगी। विद्यार्थियों को योग, विज्ञान आदिक के साथ ही इंटरनेट और साइबर सुरक्षा की जानकारी दी जाएगी। शिक्षा विभाग ने इस संबंध सभी प्रधानाचार्यों को निर्देश जारी किया है। बता दें नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षण संस्थानों में कौशल व आधुनिक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। मोबाइल फोन व इंटरनेट का इस्तेमाल बढ़ने साइबर अपराध का खतरा भी बढ़ गया है। विज्ञान प्रगति अधिकारी डॉ. दिनेश कुमार ने बताया कि इसके प्रति जागरूक करने के लिए

विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा की शिक्षा देना जरूरी है।

नए सत्र में डिजिटल उपस्थिति पर फिर होगी सख्ती

प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में एक अप्रैल से नया सत्र 2024–25 शुरू हो गया है। नए सत्र में विद्यालयों में एक दर्जन रजिस्टर के डिजिटलीकरण को लेकर फिर सख्ती की जाएगी, जिसमें डिजिटल उपस्थिति भी शामिल है। बेसिक शिक्षा विभाग इसे चरणबद्ध तरीके से लागू करेगा। पहले चरण में छात्रों की ऑनलाइन उपस्थिति व मिड–डे मील का रियल टाइम अपडेशन किया जाएगा।

नए सत्र को लेकर महानिदेशक स्कूल शिक्षा कंचन वर्मा की ओर से परिषदीय, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक व कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को लेकर दिशा–निर्देश जारी किए गए हैं।

महानिदेशक ने कहा है कि मिड–डे मील व छात्र उपस्थिति पंजिका का विद्यालयों में डिजिटल प्रयोग सुनिश्चित कराया जाए। स्कूलों में स्मार्ट क्लास व आईसीटी लैब की स्थापना की गई है। इसका बेहतर प्रयोग सुनिश्चित किया जाए। इसी क्रम में कक्षा छह से आठ तक के विद्यार्थियों के लिए रेमेडियल क्लासेस हों। विज्ञान व अंग्रेजी विषय की संदर्शिकाओं के अनुसार शिक्षण व अभ्यास कराया जाए। विभिन्न शैक्षणिक सामग्री बिग बुक्स, पिक्चर स्टोरी कार्ड, पोस्टर्स, लाइब्रेरी की किताबों, टीएलएम, मैथ्स किट, शैक्षणिक वीडियो का प्रयोग पढ़ाई में किया जाए।

नीरज और प्रवीण के बहाने भाजपा ने साधे एक तीर से कई निशाने

केशरी देवी का टिकट कटने पर लोग चौंके

प्रयागराज। इलाहाबाद और फूलपुर लोकसभा से भाजपा ने नए चेहरों को टिकट देकर एक तीर से कई शिकार करने का प्रयास किया है। नीरज त्रिपाठी की बेदाग छवि और उनके पिता केशरीनाथ त्रिपाठी के राजनीतिक सफर को देखते हुए उन पर दांव लगाया है। इसी तरह फूलपुर में तीन बार से विधायक प्रवीण पटेल को उतारकर कुर्मी मतदाताओं को एक बार फिर साधने का प्रयास किया है।

चैत्र नवरात्र के दूसरे दिन ही भाजपा ने प्रयागराज की दोनों सांसद केशरी देवी पटेल और डॉ. रीता बहुगुणा जोशी का टिकट काटकर दो नए चेहरों पर बड़ा दांव खेल दिया। सबसे ज्यादा चौंकाने वाला नाम पूर्व राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी के पुत्र नीरज त्रिपाठी का रहा। उन्हें टिकट दिए जाने को लेकर सियासी गलियारे में चर्चा रही कि रक्षामंत्री राजनाथ सिंह और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य की पैरवी की वजह से ही पार्टी नेतृत्व ने उनपर भरोसा जताया। बताया जा रहा है कि एक विशेष रणनीति के

तहत ही भाजपा ने नीरज त्रिपाठी को इलाहाबाद एवं विधायक प्रवीण पटेल को फूलपुर संसदीय सीट से प्रत्याशी बनाया। इन दोनों को टिकट देने के साथ ही भाजपा ने एक तीर से कई निशाने साधने का भी प्रयास किया है। इंडी गठबंधन की वजह से इस बार का भी चुनाव जातीय समीकरण साधने पर केंद्रित है।

पिछले कुछ दिनों से इस बात की चर्चा थी कि भाजपा अपने दोनों सांसदों का टिकट काटकर नए चेहरों को मौका दे सकती है। ऐसा हुआ भी। पार्टी ने 2019 की तरह ही इलाहाबाद से ब्राह्मण एवं फूलपुर से कुर्मी प्रत्याशी को ही टिकट दी। ताकि जातीय समीकरण साधने में कोई दिक्कत न हो।

इलाहाबाद संसदीय सीट से वर्तमान सांसद डॉ. रीता बहुगुणा जोशी के साथ विधायक हर्षवर्धन बाजपेयी, डॉ. एलएस ओझा, रईस शुक्ला, राकेश शुक्ला, अभिलाषा गुप्ता नंदी, नीलम करवरिया, डॉ. भगवत पांडेय आदि टिकट के संभावित दावेदार माने जा रहे थे, लेकिन बीते कुछ दिनों से सियासी गलियारे में नीरज त्रिपाठी का नाम भी सामने आया। चर्चा यह भी है कि बीते दिनों दिल्ली में हुई बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने भी नीरज त्रिपाठी के नाम की पैरवी की। फिलहाल पार्टी नेतृत्व ने नीरज पर भरोसा जताते हुए उन्हें अपना उम्मीदवार बना दिया है।

इसी तरह फूलपुर लोकसभा से वर्तमान सांसद केशरी देवी पटेल के साथ विधायक प्रवीण पटेल का नाम शुरू से ही चल रहा है। पिछले सप्ताह ही तकरीबन यह तय हो चुका था कि पार्टी कुर्मी बाहुल्य सीट से केशरी या प्रवीण में से किसी एक को टिकट देगी। खास बात यह है कि दोनों ही नेता डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के करीबी भी कहे जाते हैं। फिलहाल इन दोनों नेताओं में बाजी अंत में प्रवीण पटेल ने ही मारी।

केशरी देवी के नाम है फूलपुर में सर्वाधिक वोट पाने का रिकॉर्ड

फूलपुर में अब तक जितने भी लोकसभा चुनाव हुए हैं उसमें सर्वाधिक मत पाने का रिकॉर्ड वर्तमान सांसद केशरी देवी पटेल के पास ही है। उसके पहले यह रिकॉर्ड डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के नाम था। 2014 के चुनाव में पहली बार केशव मौर्य ने पांच लाख का आंकड़ा पार करते हुए तीन लाख से ज्यादा मतों से सपा प्रत्याशी धर्मराज पटेल को शिकस्त दी थी। इसके बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में वर्तमान सांसद केशरी देवी पटेल ने 5.44 लाख मत हासिल किए। उनके मुकाबले केशव को वर्ष 2014 में 5.03 लाख ही मत मिले थे।

आजमगढ़ में हमेशा मुद्दों पर भारी पड़े जातिगत समीकरण

आजमगढ़। आजमगढ़ लोकसभा सीट यादव बहुल रही है। यही कारण रहा है कि यहां पर 14 बार सिर्फ यादव सांसद चुने गए हैं। भाजपा ने दूसरी जाति के प्रत्याशी को मैदान में उतारा लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी। इसलिए इस बार यहां जाति को लेकर काफी ध्यान रखा गया है।

लोकसभा चुनावों में अगर आजमगढ़ सीट का इतिहास देखें तो यादव बाहुल इस सीट पर अब तक 14 बार यादव सांसद चुने गए हैं। भाजपा ने इस सीट पर सवर्ण और मुस्लिम प्रत्याशी उतारे लेकिन उसे जीत नसीब नहीं हुई। जब 2009 में पार्टी ने इस सीट पर रमाकांत यादव को प्रत्याशी बनाया तो उसे जीत मिली। इसके बाद 2022 के उपचुनाव में पार्टी ने दिनेश लाल यादव को उम्मीदवार बनाया और जीत हासिल की। बेशक विकास के मामले में जिला पिछड़ा हुआ है।

जब वोट देने की बारी आती है तो जातिगत आधार पर मतों का ध्रुवीकरण कुछ इस तरह होता है कि विकास से जुड़े मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। 1989 में बसपा का हाथी इस सीट पर पहली बार सरपट दौड़ा था। 1996 में रमाकांत ने सपा की साइकिल को यादव और मुस्लिम गठजोड़ से दौड़ाया। 1998 में बसपा के अकबर अहमद डंपी ने जीत दर्ज की।

1999 में रमाकांत ने एक बार फिर सपा से इस सीट पर कब्जा जमाया। 2004 में रमाकांत यादव बसपा के टिकट पर मैदान में उतरे और जीत हासिल की। 2009 में रमाकांत भाजपा के टिकट पर मैदान में उतरे और उन्होंने इस सीट पर पहली बार भाजपा का परचम फहराया।

अलीगढ़ जहरीली शराब कांड में पहला फैसला

कोर्ट ने दो तस्करों को सुनाई पांच–पांच साल कैद की सजा

अलीगढ़। यह फैसला इस कांड के सूचीबद्ध 29 मुकदमों की सुनवाई कर रहे एडीजे–आठ अशोक भारतेंदु की अदालत ने सुनाया है। यह इस कांड से जुड़े वे दो मुकदमे हैं, जिनमें सबसे पहले फैसला आया है। लंबे समय तक सुर्खियों में रहे जिले के बहुचर्चित जहरीली शराब कांड के बाद गिरफ्तार किए गए दो तस्करों को अदालत ने मिलावटी शराब तस्करी की धाराओं में पांच–पांच साल की कैद और 11–11 हजार रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई है। यह फैसला इस कांड के सूचीबद्ध 29 मुकदमों की सुनवाई कर रहे एडीजे–आठ अशोक भारतेंदु की अदालत ने सुनाया है।

यह इस कांड से जुड़े वे दो मुकदमे हैं, जिनमें सबसे पहले फैसला आया है। अभियोजन अधिवक्ता एडीजीसी कुलदीप सिंह तोमर के अनुसार लोधा थाने पर दर्ज हुए दो मुकदमों में एक में पवन उर्फ पिंटू निवासी जिरौली डोर व दूसरे में धर्मेंद्र निवासी जिरौली डोर दोषी हैं।

दोनों मुकदमों में आरोपियों से नौ 9 जून 2021 की रात अवैध शराब, गुड इवनिंग ब्रांड के रैपर, ढक्कन आदि बरामद होने का आरोप है। दोनों में चार्जशीट दायर की गई। बरामद शराब की जांच में मिथाइल अल्कोहल पाया गया था।

इस रिपोर्ट के आधार पर पाया गया कि यह भी उसी तरह की शराब थी, जो जहरीली शराब कांड में मौत का कारण बनी। चार्जशीट के आधार पर दोनों के खिलाफ एक साथ न्यायालय में ट्रायल चला और सात गवाहों की गवाही हुई। साक्ष्यों व गवाही के आधार पर दोनों को सजा सुनाई गई है। इसी मुकदमे में शनिवार को सजा की तारीख नियत थी। दोनों के हाजिर न होने के कारण अदालत से गिरफ्तारी वारंट जारी किए थे। पुलिस ने बुधवार को इन्हें पेश किया और सजा सुनाई गई। दोनों को जेल भेज दिया गया।

126 परिवारों को जीवन भर का दर्द दे गया था कांड

27 मई 2021 की देर शाम से मिलावटी शराब ने जिले में मौत का ऐसा तांडव मचाया कि प्रदेश भर में हायतौबा मच गई। पहले दिन 22 से अधिक लोगों की मौत हुई थी और 10 दिन तक मौतों का सिलसिला जारी रहा था। रिकार्ड में जरूर मौत 106 दर्ज हैं। मगर इस कांड ने 126 परिवारों के जीवन की हंसी–खुशी छीन ली।

आरोपियों की ओर से केस स्थानांतरण की अर्जी दायर

इसी न्यायालय में तीन मुख्य आरोपियों से जुड़े तीन अन्य मुकदमे भी निर्णय की दहलीज पर पहुंच गए हैं।

डीजीसी फौजदारी चौ. जितेंद्र सिंह के अनुसार मुख्य आरोपियों व घोषित माफिया सूची में शामिल ऋषि शर्मा, मुनीष शर्मा व मदन गोपाल से जुड़े तीन मुकदमे इसी न्यायालय में अंतिम स्टेज पर हैं। इनके अधिवक्ताओं की ओर से सत्र न्यायालय में ट्रांसफर अर्जी दायर की गई है, जिसके चलते उनके तीन मुकदमों में सुनवाई टल गई है। अब उन पर 16 अप्रैल के बाद कोई प्रक्रिया होगी।

मात्र 30 की उम्र में 50 साल में होनी वाली बीमारियों के शिकार हो रहे युवा

वाराणसी। ये सामान्य पार्किंसंस से कहीं अधिक प्रभावशाली होता है। इसमें शरीर की नसें (हाथ–पैर और दिमाग की नस) तेजी से सूखने लगती है। खास बात यह है कि पार्किंसंस ग्रसित मरीजों की दवाओं का असर पार्किंसंस प्लस सिंड्रोम वाले मरीजों पर नहीं होता है। पार्किंसंस प्लस सिंड्रोम की वजह से युवाओं की याददाश्त कमजोर होने के साथ ही उनके हाथ, पैर और दिमाग की नसें सूख रही हैं। पहले यह बीमारी 50 साल से अधिक उम्र वालों की होती थी, अब 30 से 40 साल वाले युवा भी इसकी चपेट में आ रहे हैं।

बीएचयू अस्पताल में हर माह 100 नए मरीज पहुंच रहे हैं।

इनमें युवा ज्यादा होते हैं।आईएमएस बीएचयू के न्यूरोलॉजी विभाग के डॉक्टर भी चिंतित हैं। इस पर नए सिरे से अध्ययन भी शुरू हो गया है। पार्किंसंस के प्रति जागरूकता को लेकर हर साल 11 अप्रैल को विश्व पार्किंसंस दिवस मनाया जाता है।

न्यूरोलॉजी विभाग के अध्यक्ष प्रो. विजयनाथ मिश्र का कहना है कि ये सामान्य पार्किंसंस से कहीं अधिक प्रभावशाली होता है। इसमें शरीर की नसें (हाथ–पैर और दिमाग की नस) तेजी से सूखने लगती है। खास बात यह है कि पार्किंसंस ग्रसित मरीजों की दवाओं का असर पार्किंसंस प्लस सिंड्रोम वाले मरीजों पर नहीं होता है।

अमेरिकी विश्वविद्यालय के साथ अध्ययन में जुटी आईएमएस की टीम

अमेरिका के पिटसबर्ग विश्वविद्यालय के साथ मिलकर न्यूरोलॉजी विभाग की डॉक्टरों की टीम युवाओं में इस बीमारी को लेकर कारणों का पता लगा रही है।

प्रो. विजयनाथ मिश्र का कहना है कि पार्किंसंस ग्रसित मरीज के लड़खड़ाने, याददाश्त कमजोर होने, हाथ, पैर की नसें सूखने की समस्या बाद में पता चलती है, लेकिन पार्किंसंस प्लस सिंड्रोम में इसका जल्दी ही पता चल जाता है। इस पर जेनेटिक स्टडीज की जा रही है।

नशाखोरी, प्रदूषण, खानपान में बदलाव बीमारी का प्रमुख वजह

पार्किंसंस प्लस सिंड्रोम की मुख्य वजह नशाखोरी, प्रदूषण, खानपान में बदलाव है। विशेषकर युवाओं में यह प्रचलन बढ़ा है। युवाओं को सामान्य भोजन की तुलना में फास्ट फूड खाना अच्छा लगता है। 30 से 40 साल वाले युवा नशे की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। युवाओं को जागरूक करने की जरूरत है।

कौशाम्बी में असलहों का जखीरा बरामद

बंद धर्मकांटा में चल रहा था कारखाना, हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

कौशांबी। एसपी बृजेश श्रीवास्तव ने पुलिस लाइन में मीडिया को जानकारी देते हुए बताया कि महेवाघाट इलाके भवनसुरी यमुना नदी कछार में एक धर्मकांटा कई सालों से बंद चल रहा था। पुलिस को सूचना मिली थी कि इसमें अवैध असलहा फैक्टरी संचालित हो रहा है। महेवाघाट थाना क्षेत्र में बंद धर्मकांटा के परिसर में चल रहे अवैध असलहा फैक्टरी का भंडाफोड़ हुआ है। मुखबिर की सूचना पर एसओजी और महेवाघाट पुलिस ने छापेमारी कर असलहों का जखीरा बरामद किया है। फैक्टरी संचालक को गिरफ्तार कर लिया गया है। गिरफ्तार संचालक हिस्ट्रीशीटर है और उस पर 25 हजार का इनाम घोषित था। एसपी ने खुलासा करने वाली टीम को पुरस्कार देने की घोषणा की है।

एसपी बृजेश श्रीवास्तव ने पुलिस लाइन में मीडिया को जानकारी देते हुए बताया कि महेवाघाट इलाके भवनसुरी यमुना नदी कछार में एक धर्मकांटा कई सालों से बंद चल रहा था। पुलिस को सूचना मिली थी कि इसमें अवैध असलहा फैक्टरी संचालित हो रहा है। पुलिस और एसओजी की टीम ने छापेमारी की तो यहां से 11 निर्मित असलहे, दो अर्धनिर्मित असलहे समेत कारतूस और शस्त्र बनाने के उपकरण मिले। मौके पर 25 हजार के इनामी अंतरजनपदीय गोतस्कर समीर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के खिलाफ हत्या के प्रयास समेत लगभग 14 मुकदमे विभिन्न थानों में दर्ज हैं। आरोपी को पुलिस ने जेल भेज दिया। भंडाफोड़ करने वाली टीम को एसपी ने 25 हजार का नकद पुरस्कार दिया।

शार्ट सर्किट से 10 बीघा फसल राख

समय से नहीं पहुंची फायर ब्रिगेड की गाड़ी

आजमगढ़। खेत में अगलगी की घटना के बाद ग्रामीण पानी लेकर दौड़ पड़े। आग बुझाने के लिए कड़ी मशक्कत की गई बावजूद इसके हवा के कारण वह और भयावह होती गई। देखते–देखते भारी मात्रा में नुकसान हो गया।

आजमगढ़ के नगर पंचायत लालगंज के मसीरपुर दीन दयाल नगर मोहल्ले में शॉर्ट–सर्किट से गेहूं की 10 बीघा फसल जल कर राख हो गई। आग लगने से आलोक सिंह, गौरव सिंह, अश्वनी सिंह, पूजा, छोटेलाल, सुनीता, कमला, प्रदीप यादव की फसल को क्षति पहुंची। किसानों का आरोप है कि आग बुझाने के लिए समय से फायर ब्रिगेड की गाड़ी नहीं आई। सूचना पाकर पहुंचे लेखपाल ने नुकसान का आकलन किया।

लखनऊ की दोनों लोकसभा सीटों का हाल

मतदान में पहले शहरी और अब ग्रामीण मतदाता हैं आगे

लखनऊ। राजधानी लखनऊ की दो लोकसभा सीटों पर वोटों का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ा हुआ है जबकि शहरी क्षेत्र मतदान के मामले में पीछे नजर आते हैं। राजधानी लखनऊ में लोकसभा की दो सीट हैं। आमतौर पर वोट डालने में ग्रामीण मतदाता शहरी से ज्यादा जागरूकता दिखाते हैं। लखनऊ में यह चलन कुछ अलग तरह से नजर आता है। शुरुआती छह लोकसभा चुनाव में शहरी मतदाताओं ने ग्रामीण सीट के मुकाबले ज्यादा मतदान किया। इसके बाद अब लगातार मोहनलालगंज सीट के मतदाता ज्यादा मतदान करते नजर आ रहे हैं। पहले लोकसभा चुनाव में राजधानी में लखनऊ संसदीय सीट के अलावा बाराबंकी को शामिल करते हुए ग्रामीण सीट थी। तब लखनऊ सीट पर महज 42.03 फीसदी और ग्रामीण सीट पर 34.10 फीसदी मतदान हुआ। वर्ष 1957 में हुए अगले चुनाव में लखनऊ में सिर्फ एक ही सीट थी। और इस पर कुल 45.12 फीसदी मतदान हुआ। लखनऊ की सीट पर आज तक नहीं हुआ 60मतदान : देश की राजनीति की दिशा प्रदेश से तय होती है। इसके बावजूद यहां के राजधानीवासी मतदान में हमेशा पिछड़े ही रहे हैं। यही वजह है कि आजादी के बाद आज तक किसी भी चुनाव में लखनऊ सीट पर एक भी बार 60 फीसदी आंकड़ा पार नहीं हुआ है। सबसे ज्यादा 58.49 फीसदी मतदान वर्ष 1962 के चुनाव में हुआ था। मोहनलालगंज सीट पर जरूर पिछले दो चुनाव में मतदान प्रतिशत ने साठ फीसदी का आंकड़ा पार किया है।

1977 तक ग्रामीणों पर भारी रहे शहरी मतदाता

वर्ष 1962 के चुनाव में लखनऊ सीट पर 58.49 और मोहनलालगंज सीट पर 46.20 फीसदी मतदान हुआ। वर्ष 1977 के चुनाव तक वोट देने में शहरी मतदाता ग्रामीणों पर भारी रहे। इसके बाद स्थिति बदली और मोहनलालगंज के मतदाताओं ने बढ़त बना ली। इस बीच वर्ष 1996 ही ऐसा चुनाव रहा, जिसमें लखनऊ के मतदाताओं ने मतदान प्रतिशत के मामले में बढ़त ली। यह सुखद रहा और जागरूकता में भी आगे बढ़ाया।

यूपी में सताने लगी गर्मी

37 डिग्री के पार पहुंच गया तापमान.. बारिश के आसार नहीं

अमरोहा। अमरोहा में भीषण गर्मी की शुरुआत हो चुकी है। अपैल के पहले पखवाड़े में ही तापमान 37 डिग्री पहुंच चुका है। मौसम विभाग का कहना है इस सप्ताह बारिश के आसार नहीं है। अमरोहा जिले में गर्मी ने तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। पिछले कुछ दिनों से दिन के समय में काफी तेज धूप निकल रही है, जिसकी वजह से शहर का अधिकतम तापमान सामान्य से ज्यादा दर्ज किया जा रहा है। आने वाले दिनों में लोगों को इससे राहत नहीं मिलने वाली है। अधिकतम पारा 37 डिग्री के पार पहुंच गया। जबकि न्यूनतम 19 डिग्री दर्ज किया जा रहा है। मौसम की तपिश लोगों को परेशान करने लगी है। सुबह से ही गर्म हवाएं चलने लगी हैं। दस बजते–बजते हवाओं का झोंका गर्म थपेड़ों में बदल रहा है। दोपहर में तो आसमान से आग बरसने लगी है। आसमान से आग उगलते सूरज से मौसम का मिजाज पूरी तरह से बदल गया है। अभी अप्रैल का पहला सप्ताह ही बीता है। मौसम के जानकार बता रहे हैं कि अगले कुछ दिनों में मौसम में और तल्खी आएगी। गर्मी का असर दिखने लगा। इससे पहले कि लोग अपने–अपने काम से बाजार या दफ्तर जाने के लिए निकलते मौसम का मिजाज पूरी तरह से तल्ख हो गया। दोपहर से पहले ही बाजार में सन्नाटा पसर गया। इक्का–दुक्का ही लोग सड़कों पर दिखे। कई लोग बदन को ढकने के साथ छाते का सहारा लेते नजर आए। मौसम का पारा बढ़ते ही बाजार का रंग भी बदल गया। बाजार में सड़क किनारे खीरा–ककड़ी से सजे ठेलों की भरमार दिखने लगी है। गर्मी से राहत पाने के लिए लोग खीरा और ककड़ी का सहारा ले रहे हैं।

अमेठी चुनाव: स्मृति इरानी के सामने दुविधा में दावेदारी, उलझन में जिम्मेदारी

बसपा भी प्रत्याशी को लेकर खामोश

लखनऊ। अमेठी लोकसभा सीट पर अभी तक भाजपा के अलावा किसी भी दल ने उम्मीदवार घोषित नहीं किया है। गांधी परिवार को लेकर कयास लगाए जा रहे हैं। वहीं, बसपा ने भी उम्मीदवार के नाम पर खामोशी बरत रखी है। सुर्खियों में छाई अमेठी संसदीय सीट से भाजपा प्रत्याशी स्मृति जूबिन इरानी के सामने चुनावी अखाड़े में कांग्रेस–सपा गठबंधन से कौन लड़ेगा, इसको लेकर स्थिति साफ नहीं है। फिलहाल, राहुल गांधी या राबर्ट वाड्रा में से किसी एक के चुनाव लड़ने के संकेत के बाद कांग्रेसी अंदर ही अंदर तैयारी कर रहे हैं लेकिन गठबंधन में सहयोगी समाजवादी पार्टी के पदाधिकारी उलझन में है। बिना प्रत्याशी के नाम की घोषणा के वह कैसे अपनी रणनीति तैयार करें, इसको लेकर माथापच्ची का दौर चल रहा है। बसपा का कहना है कि दावेदार उतारेंगे लेकिन कब.. बस जल्द ही।

उम्मीदवार का ऐलान कर भाजपा ने बनाई बढ़त

1967 में अस्तित्व में आई अमेठी सीट एक बार फिर हाईप्रोफाइल बनी हुई है। दरअसल, भाजपा ने पहली सूची में ही यहां से सीटिंग सांसद व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को चुनावी मैदान में उतार दिया है। भाजपा का चुनाव अभियान भी शुरू हो गया है। गांव–गांव टीमें लगाई गई हैं। मंडल स्तर पर बैठकें की जा रही है। हरेक बूथ का बायोडाटा तैयार किया जा रहा है।

वायनाड मतदान पर टिकी निगाहें

कभी कांग्रेस का गढ़ रही अमेठी में इस बार अजीब सी स्थिति है। दावेदार को लेकर कोई राहुल गांधी पर जोर दे रहा है तो कोई गांधी परिवार के दामाद राबर्ट वाड्रा या प्रतापगढ़ जिले की विधायक आराधना मिश्रा के नाम का जिक्र कर रहा है। हालांकि तैयारी के सवाल पर सब यही कहते हैं कि इंतजार करिए, दावेदारी भी हमारी रणनीति का हिस्सा है। राजनीतिक जानकार मानते हैं कि इसके पीछे वायनाड का पेंच फंसा हुआ है। दरअसल, राहुल गांधी वायनाड से चुनाव लड़ रहे हैं, वहां पर मतदान 26 अप्रैल को होगा।

गांधी परिवार पर टिकी सपा की नजर

समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष राम उदित यादव बताते हैं कि इसका संसदीय चुनाव पर कोई असर नहीं पड़ेगा। वैसे तो अभी चेहरा सामने नहीं है लेकिन, पार्टी गांधी परिवार के ही किसी सदस्य को केंद्र में रखकर तैयारी कर रही है।

इंतजार करिए, तैयारी पूरी है

बहुजन समाज पार्टी में भी इस बार दावेदार को उलझन है। वर्ष 2019 में गठबंधन के कारण अमेठी से बसपा का कोई उम्मीदवार मैदान में नहीं था। इस बार पार्टी किस पर दांव लगाएगी, यह एक बड़ा सवाल है। हालांकि टिकट की दौड़ में शामिल लोगों के नाम का भी खुलासा करने को पार्टी के नेता तैयार नहीं है। रही बात तैयारी की तो सभी बस यही बोल रहे हैं कि तैयारी पूरी है।

जिलाध्यक्ष दिलीप कुमार का कहना है कि इंतजार करिए, तैयारी पूरी है। कई नेता लाइन में हैं। जल्द ही टिकट की घोषणा हो जाएगी। यह स्थिति तब है जब 1989 में बसपा संस्थापक कांशीराम ने अमेठी से पहला चुनाव लड़ा था।

पांचवें चरण में मतदानः अमेठी

लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में पांचवें चरण में चुनाव होगा। नामांकन 26 अप्रैल से तीन मई तक कराया जाएगा। चार मई को नामांकन पत्रों की जांच होगी। छह मई का नाम वापसी होगी। 20 मई को मतदान।

डिंपल यादव पर हमलावर भाजपा नेता, हताश सपा का सपना होगा चकनाचूर...

मैनपुरी। मैनपुरी से भाजपा प्रत्याशी घोषित होने के बाद भाजपा नेता डिंपल यादव पर हमलावर हो गए हैं। किसी ने कहा कि हताश सपा का सपना चकनाचूर होगा तो किसी ने कहा सपा का पसीना छूटने लगेगा। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी लोकसभा सीट से जयवीर सिंह के प्रत्याशी घोषित होने के बाद से भाजपा नेता अपनी प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। भाजपा महिला मोर्चा का बुधवार को बेवर और मैनपुरी में नारी शक्ति वंदन कार्यक्रम हुआ। भाजपा महिला मोर्चा की लोकसभा प्रभारी रेनू उपाध्याय ने कहा कि हताश सपा का मैनपुरी लोकसभा सीट का सपना इस बार चकनाचूर होगा। मैनपुरी का मतदाता भी भाजपा की नीतियों में आस्था जता रहा है।

उन्होंने कहा कि जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश का मान विश्व के पटल पर बढ़ाया है। वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश को अपराधी विहीन बनाने का काम किया है। केंद्र और प्रदेश सरकार की योजनाओं का लाभ बिना भेदभाव के पात्रता के आधार पर समाज के हर वर्ग को मिला है।

हर वर्ग कर रहा समर्थन

प्रदेश में भयमुक्त सरकार होने के कारण उद्यमी प्रदेश में उद्योग लगाने लगे हैं। अपराधियों के लिए सरकार की जीरो टॉलरेंस का समाज का हर वर्ग समर्थन कर रहा है। उन्होंने कहा कि आधी आबादी इस बार भाजपा को लोकसभा सीट पर जीत दिलाने के लिए काम करेंगी।

प्रत्याशी घोषित होते ही सपा का छूटने लगा पसीना

भोगांव विधायक रामनरेश अग्निहोत्री पूर्व मंत्री ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा प्रत्याशी के रूप में जयवीर सिंह पर्यटन मंत्री को उतार कर भाजपा कार्यकर्ताओं में एक जोश भर दिया है। प्रत्याशी घोषित होते ही सपा के पसीने छूटने लगे हैं। बुधवार को एक निजी कार्यक्रम में भाग लेने के बाद पूर्व मंत्री पत्रकारों से वार्ता कर रहे थे।

देश में चल रही मोदी लहर

उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता और कार्यकर्ता मोदी और कमल के चुनाव को ही अपना प्रत्याशी मानकर मतदान करेंगे। देश में इस बार मोदी लहर चल रही है। जयवीर सिंह ने प्रदेश में पर्यटन विभाग में बढ़ावा किया है। जनपद के कार्यकर्ता सहित मतदाता भाजपा के साथ हैं। जनता में उनका विश्वास और उनके कार्य के प्रति लोगों में काफी विश्वास है।

भाई-बहन, ननद-भाभी से लेकर और ससुर-बहू और पूर्व पति-पत्नी तक

सीटों पर अपनों में चुनावी जंग

नई दिल्ली। 19 अप्रैल से लेकर 1 जून तक सात चरणों में लोकसभा के चुनाव होने हैं। पहले और दूसरे चरण के नामांकन की प्रक्रिया भी खत्म हो गई है। इसके साथ कई सीटों के मुकाबलों की तस्वीर स्पष्ट हो चुकी है। इस चुनाव में कई सीटें ऐसी हैं जहां सियासी लड़ाई परिवार के सदस्यों के बीच है। देश में इस वक्त चुनाव की सरगर्मी है। देशभर में 19 अप्रैल से लेकर 1 जून तक सात चरणों में लोकसभा के चुनाव होने हैं। पहले और दूसरे चरण के नामांकन की प्रक्रिया समाप्त हो गई है। पहले चरण में 21 राज्यों की 102 सीटों के लिए 19 अप्रैल को मतदान होगा। वहीं दूसरे चरण में 13 राज्यों की 89 सीटों के लिए 26 अप्रैल को लोग वोट करेंगे।

दो चरणों की नामांकन की प्रक्रिया पूरी होने के साथ 191 सीटों के मुकाबलों की तस्वीर साफ हो चुकी है। कई सीटों पर चेहरों ने सियासी लड़ाई को दिलचस्प बना दिया है। कई जगह पर परिवार के सदस्य ही आमने-सामने हैं। आइये जानते हैं ऐसी कितनी सीटें हैं जहां परिवार के सदस्यों के बीच लड़ाई है? ये उम्मीदवार किन दलों से हैं? इन सीटों पर पिछली बार किसे जीत मिली थी?

भाभी-ननद हुईं आमने-सामने

महाराष्ट्र की बारामती सीट पर रिश्ते में ननद भौजाई का राजनीतिक मुकाबला दिलचस्प हो चुका है। यहां राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी-अजित पवार खेमा) ने सुनेत्रा पवार को लोकसभा चुनाव 2024 के लिए उम्मीदवार बनाया है। सुनेत्रा महाराष्ट्र के उप-मुख्यमंत्री अजित पवार की पत्नी हैं। वहीं सुनेत्रा के खिलाफ उनकी ननद सुप्रिया सुले चुनाव मैदान में हैं। सुप्रिया शरद पवार की बेटी हैं। बारामती लोकसभा क्षेत्र की मौजूदा सांसद एनसीपी (शरद चंद्र पवार) की सुप्रिया सुले हैं। 2019 में सुप्रिया ने भाजपा के कंचन राहुल कूल को हराया था।

पूर्व पति-पत्नी एक दूसरे के खिलाफ उतरे

पश्चिम बंगाल की बिष्णुपुर सीट पर पूर्व पति-पत्नी के बीच सियासी मुकाबला है। बिष्णुपुर में वर्तमान भाजपा सांसद सौमित्र खान फिर से मैदान में हैं। तृणमूल कांग्रेस ने यहीं पर उनकी पूर्व पत्नी सुजाता मंडल को टिकट देकर मुकाबले को रोचक बना दिया है। पिछले लोकसभा चुनाव में सौमित्र खान ने तृणमूल कांग्रेस के उम्मीदवार श्यामल संत्रा को शिकस्त दी थी।

चौटाला परिवार के सदस्य चुनाव मैदान में

हरियाणा की हिसार सीट पर मुकाबला चौटाला परिवार के बीच होने की उम्मीद है। भाजपा ने यहां ओपी चौटाला के बेटे रणजीत चौटाला को मैदान में उतारा है। रणजीत निर्दलीय विधायक और हरियाणा सरकार में कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं। भाजपा में शामिल होने के बाद उन्हें हिसार सीट से मैदान में उतार दिया गया है। वहीं इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) ने सुनैना चौटाला को मैदान में उतारा है। सुनैना इनेलो की महिला विंग की प्रधान महासचिव हैं। रणजीत चौटाला सुनैना चौटाला के रिश्ते में चाचा सुसर हैं। जेजेपी यानी जननायक जनता पार्टी भी हिसार सीट से ओम प्रकाश चौटाला की एक और बहू नैना चौटाला को मैदान में उतारने की तैयारी में है। पूर्व उप-मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला की मां नैना बाढड़ा चौटाला सीट से विधायक हैं। 2019 में भी इस सीट से चौटाला परिवार के दुष्यंत चौटाला जजपा के टिकट पर चुनाव मैदान में थे। हालांकि, इस चुनाव में जीत भाजपा के उम्मीदवार बृजेंद्र सिंह को मिली थी। बृजेंद्र हाल ही में भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो गए और पार्टी के उम्मीदवार भी हैं।

भाई-बहन की सियासी टक्कर

आंध्र प्रदेश की कडप्पा लोकसभा सीट पर भी परिवार वालों के बीच भिड़ंत होनी है। कांग्रेस ने वाईएस शर्मिला को अपने पारिवारिक गढ़ कडप्पा सीट से उम्मीदवार बनाया है। शर्मिला आंध्र प्रदेश कांग्रेस इकाई की प्रमुख हैं। वह कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस राजशेखर रेड्डी की बेटी और वाईएसआर कांग्रेस पार्टी प्रमुख वाईएस जगन मोहन रेड्डी की बहन हैं। इस चुनाव में शर्मिला अपने चचेरे भाई वाईएस अविनाश रेड्डी से मुकाबला करेंगी। अविनाश रेड्डी को वाईएसआर कांग्रेस ने मैदान में उतारा है। 2019 से इस सीट पर अविनाश रेड्डी को जीत मिली थी। वाईएसआर की तरफ से उतरे अविनाश ने टीडीपी के आदि नारायणा रेड्डी को शिकस्त दी थी।

भदोही से डा. विनोद बिंद को भाजपा ने बनाया उम्मीदवार

भदोही। भारतीय जनता पार्टी ने भदोही लोकसभा सीट से भी उम्मीदवार का एलान गुरुवार को कर दिया। भाजपा ने इस सीट से डॉ. विनोद कुमार बिंद को प्रत्याशी घोषित किया है। भारतीय जनता पार्टी ने लंबे इंतजार के बाद भदोही लोकसभा से अपना उम्मीदवार घोषित कर दिया है। पार्टी ने भदोही लोकसभा से डॉ. विनोद बिंद को अपना उम्मीदवार बनाया है। पार्टी ने वर्तमान सांसद डॉ. रमेश चन्द्र बिंद का टिकट काट दिया है। डॉ. विनोद बिंद वर्तमान में मिर्जापुर के मझवां से विधायक हैं। डॉ. विनोद कुमार बिंद अपने समर्थकों के साथ दिसंबर 2022 में वाराणसी और जून 2023 में भदोही के टोल प्लाजा पर हुए विवाद को लेकर सुर्खियों में रहे हैं। दोनों ही मामलों में विनोद के समर्थकों के खिलाफ मुकदमे दर्ज किए गए थे।

2022 के विधानसभा चुनाव में मिर्जापुर के मझवां से समाजवादी पार्टी से टिकट मांग रहे डॉ. विनोद कुमार बिंद को असफलता मिली थी। सपा के लिए उन्होंने लंबे समय तक प्रचार भी किया था। आखिरी समय में उन्होंने निषाद पार्टी का दामन थामा था और फिर एनडीए के प्रत्याशी के तौर पर जीत दर्ज किए थे।

भदोही लोकसभा में काफी लंबे समय से भाजपा प्रत्याशी को लेकर कयासों का दौर चल रहा था। गुरुवार को जैसे ही टिकट का एलान हुआ। राजनीतिक गलियारों में सरगर्मियां बढ़ गईं। भदोही लोकसभा में बिंद समुदाय की संख्या लगभग तीन लाख के आसपास है। ऐसे में पार्टी का बिंद समुदाय को टिकट देना एक बड़ा मास्टर स्ट्रोक माना जा रहा है। वर्तमान सांसद डॉक्टर रमेश चन्द्र बिंद को लेकर पार्टी के अंदरखाने समेत आम लोगों में भी नाराजगी थी। बताया जा रहा है इसी को आधार बनाकर पार्टी ने रमेश बिंद का टिकट काटा है।दूसरी तरफ मझवां विधायक डॉ. विनोद बिंद भी बिंद समुदाय के अच्छे नेता माने जाते हैं। 2022 के विधानसभा चुनाव में वे सपा टिकट मांग रहे थे। टिकट न मिलने पर उन्होंने निषाद पार्टी का दामन थामा और विधायक बने। भाजपा उम्मीदवार के मैदान में आने के बाद अब लोकसभा में राजनीतिक पारा तेजी चढ़ेगा।

नई दिल्ली । संसदीय चुनावों की बिसात बिछने के साथ ही राजनीतिक दलों में शह और मात का खेल शुरू हो गया है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के जेल जाने से दिल्ली आम आदमी पार्टी और भाजपा की सियासत का अखाड़ा बनी हुई थी, ऐसे में बुधवार को कैबिनेट मंत्री राजकुमार आनंद के पद और पार्टी छोड़ने से सियासी पारा नए सिरे से ऊपर चढ़ा है। माना जा रहा है कि अपने मंत्री के इस्तीफे और उनके अनुसूचित जाति की अनदेखी करने के आरोपों से बचाव कर पाना आप के लिए आसान नहीं होगा। इसने भाजपा के आप पर हमलावर होने की नई जमीन तैयार की है। इसमें फिर से राजनीतिक नैतिकता का सवाल भी आप के सामने खड़ा होगा। इस्तीफे के तुरंत बाद आप ने डैमेज कंट्रोल करने की कोशिश भी की। आप नेताओं ने इसे भाजपा के डर और विधायकों की तोड़-फोड़ के आरोपों का प्रमाण बताया।

गरजने वाले नेताओं के गर्दिश में रहे सितारे...

कई को मिल चुका है सबक तो कई कद्दावर कर रहे जद्दोजहद

लखनऊ। देवीपाटन मंडल की सीटों पर कई नेताओं को सबक मिल चुका है। हाल ये है कि कई तो सियासत की मुख्यधारा से दूर हो गए हैं जबकि कई अब भी ठिकाना खोज रहे हैं। राजनीति में कब कौन अर्श से फर्श पर आ जाए और कब बुलंदियों को छूने लगे, कुछ कहा नहीं जा सकता। देवीपाटन मंडल की संसदीय सीटों पर ही नजर दौड़ाएं तो कई उदाहरण ऐसे हैं जिनकी सियासत में कभी तूती बोलती रही हैं वो अब गायब हैं या फिर अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए सारी जुगत लगा रहे हैं। इस समय कैसरगंज संसदीय सीट की खासी चर्चा हैं। असल में जिस तरह भाजपा की दसवीं सूची से भी कैसरगंज का नाम लापता है, उससे एक बड़ा संदेश भी सामने आ रहा है।

कैसरगंज एक ऐसी सीट है जो पूरे मंडल ही नहीं, सूबे की चर्चित सीटों में शामिल हो गई है। हालात कुछ भी हों, लेकिन कद्दावर के टिकट में देरी समझ से परे मानी जा रही है। ऐसे में मंडल की कई सीटें और दावेदार हैं जो सियासत की ऊंचाइयों तक तो पहुंचे, लेकिन अब वह सियासी मैदान से दूर हैं। श्रावस्ती संसदीय सीट से वर्तमान और दो पूर्व सांसद की दशा किसी से छिपी नहीं हैं। बहराइच के भी एक पूर्व सांसद राजनीति में हाशिये पर हैं। गोंडा में एक पूर्व सांसद तो राजनीति के मैदान को छोड़ चुके हैं। वहीं, साल 2009 में संसदीय चुनाव में दम दिखाने वाले ने पाला तो बदला, लेकिन गठबंधन के खेल में पेंच फंस गया है।

कैसरगंज में बेनी की सपा मुखिया से हुई थी रार

कैसरगंज सीट पहले भी चर्चाओं में रही है। सपा के कद्दावर नेता बेनी प्रसाद वर्मा 1996 से 2004 तक लगातार चार बार सांसद चुने गए। केंद्रीय दूरसंचार मंत्री तक बने। सपा मुखिया मुलायम सिंह यादव के सबसे करीबी होने के बाद भी उनसे ठन गई थी। इस कारण 2009 से पहले ही बेनी प्रसाद वर्मा को पार्टी छोड़कर कांग्रेस का दामन थामना पड़ा। 2009 में कांग्रेस से गोंडा के सांसद चुने गए और केंद्रीय मंत्री बने, लेकिन 2014 में जनता ने उन्हें भी नकार दिया।

बहराइच में विवादों से चर्चा में आईं थी सावित्री

भाजपा से साल 2014 में सांसद बनीं साबित्री बाई फुले भी ज्यादा दिन पार्टी में टिक नहीं सकीं। बयानों के कारण अक्सर भाजपा हाई कमान के निशाने पर रहीं। 2019 में उन्हें आभास हो गया कि पार्टी से टिकट नहीं मिलेगा। ऐन वक्त पर उन्होंने कांग्रेस का दामन तो थामा लेकिन सियासत में सफल नहीं हो सकीं। अब वह कांग्रेस में तो हैं लेकिन सियासी मैदान से करीब-करीब बाहर हो चुकी हैं।

सबसे चूचत रही गोंडा संसदीय सीट

देवीपाटन मंडल में गोंडा संसदीय सीट सबसे चर्चित रही है। साल 1971 में चाचा-भतीजे के बीच सियासी मुकाबले से आनंद सिंह चर्चा में आए। 1996 में भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह के केस की खासी चर्चा हुई। उनकी पत्नी केतकी सिंह ने मोर्चा संभाला और जीत कर सदन पहुंचीं। 1998 के चुनाव में फिर भाजपा से बृजभूषण शरण सिंह मैदान में आए अति आत्मविश्वास के भाषणों से चर्चित हुए और चुनाव हार गए। 1999 में वह फिर लड़े और जीते, लेकिन 2004 में पार्टी हाईकमान ने उनका टिकट बदलकर बलरामपुर भेज दिया।

श्रावस्ती की सियासत से बाहर हुए कई पूर्व सांसद

श्रावस्ती संसदीय सीट से कद्दावर नेताओं को पार्टियों के हाईकमान ने निशाने पर लिया। पूर्व सांसद रिजवान जहीर साल 2004 में सपा हाईकमान के निशाने पर आए। इसके बाद मुख्यधारा में वापस नहीं आ सके। 2004 में सपा मुखिया मुलायम सिंह यादव ने उनके सामने मोहम्मद उमर को उतार कर झटका दिया। 2009 में बसपा से मैदान में आए और चुनाव नहीं जीत सके।

कारण बहराइच की रूवाब सईदा को सपा ने प्रत्याशी बना दिया था। इस साल कांग्रेस से विनय पांडेय जीते, लेकिन उनकी क्षेत्र में उपलब्धता कम होने से 2014 में हार मिली। इसके बाद यह भी हाशिये पर आ गए और अब सपा में तो हैं लेकिन कोई चर्चा नहीं है। 2019 में बसपा से राम शिरोमणि वर्मा भी पार्टी के निशाने पर आए। 2014 में सांसद बने दद्दन मिश्र भी इस बार पार्टी के विश्वास पर खरे नहीं उतर सके।

'परिछावन में' धूम

दिल्ली। भोजपुरी गाने रिलीज के साथ ही इंटरनेट पर छा जाते हैं. हाल ही में पवन सिंह का भी नया गाना रिलीज हुआ है. हर बार की तरह आज भी पवन सिंह के गाने को कमाल का रिस्पांस मिल है. न सिर्फ गाने के बोल खास हैं, बल्कि वीडियो भी दिलचस्प नजर आ रही है. आप भी सुनिए धमाकेदार 'परिछावन में' गाना.

'परिछावन में' गाने ने मचाई धूम

वायरल हो रहे 'परिछावन में' गाने को आवाज दी है पवन सिंह और शिवानी सिंह ने. वहीं, वीडियो में नजर आ रही हैं क्वीन शालिनी. गाने के लिरिक्स की फैंस बहुत तारीफ कर रहे हैं. बता दें कि इस गाने को लिखा है अरुण बिहारी ने. गनायक फिल्म के ऑफिशियल यूट्यूब हैंडल पर इस गाने को रिलीज किया गया है.

क्वीन शालिनी ने जीता दिल

क्वीन शालिनी हर एक वीडियो में कमाल के डांस से फैंस का दिल जीत लेती हैं. 'परिछावन में' में भी वो दमदार मूव्स दिखा रही हैं. पवन सिंह के साथ उनकी जोड़ी को लोग बहुत पसंद कर रहे हैं.कोरियोग्राफी के साथ–साथ कॉस्टयूम और शूटिंग लोकेशन भी बढ़िया नजर आ रही है.

4 घंटे में हो गया है वायरल

पवन सिंह के 'परिछावन में' गाने ने रिलीज के साथ ही धूम मचा दी है. 4 घंटे में गाने पर 2 लाख से ज्यादा व्यूज आ गए हैं. साथ ही कमेंट सेक्शन में भी हजारों की संख्या में कमेंट्स आ रहे हैं. एक यूजर ने लिखा, 'भोजपुरी इंडस्ट्री में एक ही ऐसे सिंगर हैं जिनके गाने के बिना सब अधूरा लगता है.' वहीं ज्यादातर लोग गाने की तारीफ कर रहे हैं. बता दें कि पवन सिंह का यह पहला गाना नहीं है, जिसे कमाल का रिस्पांस मिला हो. सिंगर के अधिकतर गाने रिलीज के साथ ही वायरल हो जाते हैं.

पवन सिंह का लेटेस्ट गाना 'परिछावन में' रिलीज के साथ ही वायरल हो गया है. फैंस गाने को कमाल का रिस्पांस दे रहे हैं।

भामिनी ओझा निभाएंगी 'कस्तूरबा गांधी' का किरदार

पिछले काफी समय से अभिनेता प्रतीक गांधी की सीरीज गांधी सुर्खियों में बनी हुई है। अब इस सीरीज को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आया है। दरअसल इसमें भामिनी कस्तूरबा गांधी का किरदार निभाने वाली हैं। ऐसे में प्रतीक और भामिनी दोनों पति–पत्नी को रियल लाइफ से अब स्क्रीन पर एक साथ देखने के लिए उनके फैंस भी तैयार हैं।

न्यूज नेटवर्क, मुंबई। वास्तविक व्यक्तियों की भूमिका को पर्दे पर निभाना कलाकारों के लिए हमेशा बड़ी चुनौती भरा और जिम्मेदारी का काम होता है। इस क्रम में जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी की भूमिका निभाने की बात आती है, तो यह जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। साल 2022 में प्रोडक्शन हाउस अप्लाज एंटरटेनमेंट की तरफ से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जीवन गाथा पर वेब सीरीज गांधी बनाने की घोषणा की गई थी। हंसल मेहता के निर्देशन में बन रहे इस शो में महात्मा गांधी की भूमिका में अभिनेता प्रतीक गांधी होंगे। वहीं इस शो में महात्मा गांधी की पत्नी कस्तूरबा गांधी की भूमिका के लिए प्रतीक की पत्नी और अभिनेत्री भामिनी ओझा को चुना गया है।

भामिनी ने किरदार को लेकर कही ये बात

निर्माता चाहते हैं प्रतीक और भामिनी की वास्तविक जीवन वाला पति–पत्नी का जुड़ाव और रिश्ता स्क्रीन पर भी दिखे। इस जिम्मेदारी को लेकर भामिनी का कहना है, कस्तूरबा गांधी की भूमिका मिलना मेरे अभिनय करियर की सबसे खूबसूरत चीज है। हमने थिएटर के शुरुआती दिनों से ही सोचा था कि हम एक साथ स्क्रीन साझा करेंगे। अब यह हो रहा है। मेरी कोशिश यह भूमिका ईमानदारी के साथ निभाने की होगी।

रील स्टार से भोजपुरी एक्ट्रेस बनीं शिल्पी राघवानी

,सलमान खान ने दे दी फैंस कोई दी अपनी अगली फिल्म के टाइटल से उठाया पर्दा सुल्तान और टाइगर के बाद अब सलमान खान बनेंगे 'सिकंदर'

ईद पर वापसी के लिए बेकरार सलमान खान

2025 में 'सिकंदर' बनकर लौटेंगे बाक्स आफिस के सुल्तान

एंटरटेनमेंट डेस्क,। ईद के मौके पर अगर फैंस को किसी स्टार का सबसे ज्यादा बेसब्री से इंतजार रहता है, तो वह हैं सलमान खान। ईद भाईजान के बिना फैंस को थोड़ी फीकी–फीकी लगती है। इस बार बड़े मियां छोटे मियां और मैदान के साथ अक्षय कुमार और अजय देवगन फैंस की ईद को खास बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

इस बीच ही अपने चाहने वालों की निराशा को दूर करते हुए दबंग सलमान खान ने फैंस से ये वादा कर दिया है कि वह अगली ईद पर फिर लौटेंगे। सलमान खान पिछले काफी समय से निर्देशक ए आर मुरुगदोस के साथ फिल्म को लेकर चर्चा में हैं। बीते महीने ही उन्होंने फैंस को बताया था कि वह साउथ के मशहूर डायरेक्टर संग एक्शन फिल्म लेकर आ रहे। हर बार की तरह खुद सलमान खान इस ईद भी अपने फैंस से दूर नहीं रहे। उन्होंने फेस्टिवल के इस खास मौके पर अपने चाहने वालों को तोहफा देते हुए अपनी अगली फिल्म के टाइटल का खुलासा कर दिया है।

सलमान खान की अगली फिल्म का ये है टाइटल

सलमान खान ने ईद 2024 के खास मौके पर अपने फैंस को मुबारकबाद देने के साथ ही एक ऐसा तोहफा दिया है, जिससे उनके चेहरों पर एक बड़ी सी मुस्कान आ गयी है। सलमान खान ने निर्देशक ए आर मुरुगदोस के साथ अपनी अगली फिल्म के टाइटल पर से पर्दा उठाया। टाइगर–सुल्तान और दबंग बनने के बाद सलमान खान ने बताया कि अब वह 'सिकंदर' बनकर आ रहे है। सलमान खान ने फिल्म का टाइटल अनाउंस करने के साथ ही कैप्शन में लिखा, "इस ईद बड़े मियां छोटे मियां और मैदान को देखो और अगली ईद 'सिकंदर' से आकर मिलो। आप सभी को ईद मुबारक"।

ईद के मौके पर फैंस को सलमान खान की फिल्म का इंतजार रहता है। अगर बालीवुड के सुल्तान ईद पर सिनेमाघरों में न आए तो फैंस निराश हो जाते हैं। इस ईद पर भले ही न आए हों लेकिन उन्होंने फैंस को ऐसा सरप्राइज दिया जिससे उनके चेहरे खिल उठे हैं। दबंग खान ने अगली फिल्म के टाइटल पर से पर्दा उठा दिया है।

मुंबई । मुंबई इंडियंस के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ गुरुवार को खेले गए आईपीएल मैच में कहर मचाकर रख दिया. जसप्रीत बुमराह ने अपनी घातक गेंदबाजी से रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बड़े–बड़े बल्लेबाजों को चित करके रख दिया. जसप्रीत बुमराह ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ 7 विकेट से मिली जीत में मुंबई इंडियंस के लिए 21 रन देकर पांच विकेट चटकाए.

बता दें कि जसप्रीत बुमराह ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ कातिलाना गेंदबाजी करते हुए विराट कोहली (3), फाफ डु प्लेसिस (61), महिपाल लोमरोर (0), सौरव चौहान (9) और विजयकुमार वैशाख (0) को आउट किया. मुंबई इंडियंस के लिए जसप्रीत बुमराह ने अकेले किला लड़ाते हुए बेहद सटीक गेंदबाजी की और उनके वैरिएशन भी कमाल के थे. जसप्रीत बुमराह ने सटीक यॉर्कर के साथ बाउंसर के जरिए बल्लेबाजों को खूब परेशान किया.

बल्लेबाजों के लिए इतने घातक क्यों हैं बुमराह?

बल्लेबाजों पर दबाव बनाने के लिए वैरिएशन पर लगातार काम कर रहे जसप्रीत बुमराह एक तेज गेंदबाज के तौर पर अपने अहं को तिलांजलि देने को तैयार हैं और उन्हें विविधता की तलाश के लिए धीमी गेंद डालने से भी गुरेज नहीं है. जसप्रीत बुमराह ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ सात विकेट से मिली जीत में मुंबई इंडियंस के लिए 21 रन देकर पांच विकेट लिए. वह अब दस विकेट लेकर युजवेंद्र चहल के साथ गेंदबाजों की लिस्ट में टॉप पर हैं.

बुमराह ने खोल दिया अपनी कामयाबी का राज

जसप्रीत बुमराह ने मैच के बाद कहा,'आपको हमेशा यॉर्कर डालने की जरूरत नहीं है. कई बार यॉर्कर और कई बार धीमी गेंद भी डालनी होती है. इस प्रारूप में अहं के लिये जगह नहीं है. आप 145 किमी की रफ्तार से भी गेंद डाल सकते हैं लेकिन कई बार धीमी गेंद डालना जरूरी होता है. यह प्रारूप गेंदबाजों के लिए काफी कठिन है. मैंने अपने करियर की शुरुआत से ही विविधता पर काम किया है. जब प्रदर्शन अच्छा नहीं हो रहा था, तब मैने वीडियो देखे और समीक्षा की कि क्या सही नहीं हो रहा है. तैयारी बहुत अहम है और लगातार सुधार जरूरी है.'

रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने पलट दिया टी20 क्रिकेट का इतिहास

पहली बार एक पारी में हुआ ऐसा अनोखा कारनामा

मुंबई इंडियंस और रक्षयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच गुरुवार को आईपीएल 2024 का 25वां मुकाबला वानखेड़े स्टेडियम पर खेला गया। आरसीबी की पारी के दौरान कुछ ऐसा घटा जो अब तक किसी टी20 पारी में नहीं हुआ था। आरसीबी ने पहले बल्लेबाजी करके 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 196 रन बनाए लेकिन इसके बावजूद उसे मुंबई इंडियंस के हाथों 7 विकेट की शिकस्त झेलनी पड़ी।

स्पोर्ट्स डेस्क। मुंबई इंडियंस और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच गुरुवार को आईपीएल 2024 का 25वां मैच वानखेड़े स्टेडियम पर खेला गया। यह मुकाबला हाई स्कोरिंग था, जिसमें मेजबान टीम ने एकतरफा अंदाज में 27 गेंदें शेष रहते सात विकेट से जीत दर्ज की। मैच भले ही मुंबई इंडियंस के नाम रहा हो,

लेकिन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने टी20 क्रिकेट का एक अनोखा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। बता दें कि फाफ डू प्लेसी के नेतृत्व वाली आरसीबी ने पहले बल्लेबाजी की और निर्धारित 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 196 रन बनाए।

टी20 क्रिकेट में अनोखा कारनामा

आरसीबी की तरफ से कप्तान फाफ डू प्लेसी (61), रजत पाटीदार (50) और दिनेश कार्तिक (53') ने शानदार पारियां खेली। मगर इसी पारी में ग्लेन मैक्सवेल, महिपाल लोमरोर और विजयकुमार विशाक खाता खोले बिना पवेलियन लौट गए। टी20 क्रिकेट में पहली बार ऐसा हुआ जब तीन बल्लेबाजों ने अर्धशतक जमाए और तीन बल्लेबाज बिना खाता खोले आउट हुए।

ऐसा भी पहली बार हुआ...

इसी प्रकार आरसीबी की पारी टी20 प्रारूप में पहली बार बनी, जहां तीन खिलाड़ियों ने अर्धशतक जड़े और एक गेंदबाज ने पांच विकेट चटकाए। डू प्लेसी, कार्तिक और पाटीदार ने अर्धशतक जड़े जबकि मुंबई इंडियंस के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने पांच विकेट चटकाए।

बड़े रिकार्ड की बराबरी

मुंबई इंडियंस और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच मुकाबले में कुल पांच बल्लेबाजों ने अर्धशतक जमाए। मुंबई की तरफ से ईशान किशन और सूर्यकुमार यादव ने अर्धशतक जड़े। यह आईपीएल में पांचवां मौका रहा जब पूरे मैच में कुल पांच बैटर्स ने अर्धशतक जमाए।

आईपीएल मैच में पांच 50+ स्कोर

पंजाब किंग्स बनाम राजस्थान रॉयल्स, शारजाह, 2020
आरसीबी बनाम मुंबई इंडियंस, दुबई, 2020
आरसीबी बनाम लखनऊ सुपरजायंट्स, बेंगलुरु, 2023
सीएसके बनाम केकेआर, कोलकाता, 2023
आरसीबी बनाम एमआई, मुंबई, 2024।

गंभीर से गले मिलने पर कोहली ने तोड़ी चुप्पी

नवीन से सुलह पर भी किया खुलासा

स्पोर्ट्स डेस्क। विराट कोहली ने कार्यक्रम के दौरान टीम इंडिया की 'सीता–गीता' को लेकर भी चर्चा की। उन्होंने उन दो खिलाड़ियों के नाम का खुलासा किया जो एक–दूसरे के बिना पल भी नहीं रह सकते। 35 वर्षीय बल्लेबाज ने शुभमन गिल और ईशान किशन को भारतीय टीम की 'सीता–गीता' का टैग दिया। टीम इंडिया के पूर्व कप्तान विराट कोहली का विवादों से पुराना नाता रहा है। अक्सर उनकी अन्य खिलाड़ियों से कहासुनी होती रहती है। पिछले साल आईपीएल मैच के दौरान किंग कोहली और नवीन–उल–हक के बीच जमकर बहस हुई थी। यह विवाद इतना बढ़ गया था कि तत्कालीन कोच गौतम गंभीर भी इसमें कूद पड़े थे और दोनों के बीच तनातनी हो गई थी। हालांकि, आईपीएल के 17वें सीजन में तीनों के बीच विवाद खत्म हो गया। विराट ने नवीन को गले लगाकर उनकी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया जबकि कोलकाता बनाम आरसीबी मैच में गौतम गंभीर ने स्टार बल्लेबाज को गले लगाया। इस पर अब आरसीबी के दिग्गज बल्लेबाज ने चुप्पी तोड़ी है।

विराट ने खोला बड़ा राज

कोहली ने एक कार्यक्रम के दौरान गौतम गंभीर और नवीन–उल–हक के साथ विवाद खत्म करने को लेकर चर्चा की। उन्होंने बताया कि दोनों के साथ दोस्ती के बाद फैंस का 'मसाला' खत्म हो गया। उन्होंने कहा, "लोग मेरे बर्ताव से निराश होने लगे हैं। मैंने नवीन के साथ झप्पी डाल ली (गले लगाया), उस दिन गौतम गंभीर भाई ने भी मुझे गले लगाया। इसलिए तुम्हारा मसाला खत्म हो गया है।"

नवीन का बयान

आईपीएल 2023 में विराट कोहली संग विवाद के बाद नवीन फैंस के निशाने पर रहे थे। हालांकि, वनडे विश्व कप के दौरान दोनों के बीच की गहमा–गहमी खत्म हो गई। इसको लेकर नवीन ने कहा, "उन्होंने मेरे साथ अनबन को खत्म करने का आग्रह किया। मैंने भी कहा कि चलिए इस विवाद को खत्म करते हैं। हमने ठहाके लगाए, गले लगाया और आगे बढ़ गए। उन्होंने यह भी कहा कि अब के बाद आपको मेरा नाम सुनाई नहीं देगा बल्कि दर्शकों के चिल्लाने की आवाज सुनाई देगी।"

कौन हैं टीम इंडिया की 'सीता–गीता'

विराट कोहली ने कार्यक्रम के दौरान टीम इंडिया की 'सीता–गीता' को लेकर भी चर्चा की। उन्होंने उन दो खिलाड़ियों के नाम का खुलासा किया जो एक–दूसरे के बिना पल भी नहीं रह सकते। 35 वर्षीय बल्लेबाज ने शुभमन गिल और ईशान किशन को भारतीय टीम की 'सीता–गीता' का टैग दिया। उन्होंने कहा, "बहुत मजेदार हैं, सीता और गीता (इशान और शुभमन)। मुझे भी नहीं पता कि क्या हो रहा है। ज्यादा कुछ नहीं कह सकता लेकिन ये लोग टूर के दौरान अकेले नहीं रह सकते। अगर हम खाने के लिए बाहर निकलते हैं, तो वे एक साथ आएंगे, चर्चा के दौरान भी वे हमेशा साथ रहते हैं, मैंने उन्हें कभी अकेले नहीं देखा।'' विराट इन दिनों आईपीएल 2024 में खेलते नजर आ रहे हैं। वह 316 रनों के साथ ऑरेंज कैप की दौड़ में शीर्ष पर काबिज हैं।

दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003

Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।